रोमियों
रोम शहर सत्संग को राजदूत पौलुस का पत्र

पुस्तक की कुछ ज़रूरी बातें

मुक्तिदाता येशु के परमस्वर्ग में वापस आने के बाद के कुछ सालों में, परमात्मा की पवित्र आत्मा ने मुक्तिदाता येशु के कई राजदूतों को प्रेरित करना जारी रखा जैसे कि पौलुस ने रोमन साम्राज्य के विभिन्न शहरों में नए सत्संग शुरू करने के लिए (ग्रंथ के पीछे “शहरों सत्संग” का नक्शा देखें)। हालाँकि, राजधानी रोम में सत्संग द्वारा पौलुस शुरू नहीं किया गया था, बल्कि कुछ अन्य भक्तों द्वारा शुरू किया गया था। पौलुस रोम आने और उस शहर को स्पेन देश तक नए सत्संग शुरू करने का स्थान बनाने की उम्मीद कर रहा था। और, पौलुस यह भी सुनिश्चित करना चाहता था कि वहाँ सत्संग स्पष्ट रूप से प्रभु येशु और उनके अन्य राजदूतों की शिक्षाओं पर आधारित हो। इसलिए वहाँ पहुँचने से पहले उसने रोम शहर के सत्संगियों को सावधानीपूर्वक यह लंबा पत्र लिखा।

पौलुस परमात्मा के शुभ संदेश के बारे में लिखते हैं कि दुनिया के सभी समाजों के लोग मुक्तिदाता येशु में आस्था के माध्यम से अपने पापों का लेखा मिटा सकते हैं। फिर, लोग इस जीवन में वास्तव में परमात्मा को प्रसन्न करना शुरू कर सकते हैं और मोक्ष के मार्ग पर चल सकते हैं! पौलुस यह भी बताते हैं कि कैसे यहूदी लोगों और दुनिया के अन्य समाजों के लोगों को अब एकता, सम्मान और प्रेम में एक साथ जुड़ना चाहिए, जो प्रभु येशु के सभी सच्चे शिष्यों का कर्तव्य है।

यह आध्यात्मिक और व्यावहारिक शिक्षा है जिसने 2000 वर्षों से सत्संगियों का मार्गदर्शन करने में मदद की है। इसे अपनाने के बाद, इसने दुनिया के लगभग हर हिस्से में परमात्मा के साम्राज्य का आशीर्वाद पहुँचाया है। अब, जब आप इसे पढ़ते हैं, तो आप

इसे अपना बना सकते हैं और हर समाज के लोगों का स्वागत और आशीर्वाद देखने के लिए परमात्मा के आंदोलन में शामिल हो सकते हैं!

प्रार्थना - “हे परमात्मा, रोम शहर में सत्संग के लिए यह पत्र लिखने और अपने शिष्य पौलुस को प्रेरणा देने के लिए आपका धन्यवाद। यह आपकी कृपा है कि हमारे पाप कर्मों का खाता मिट सकता है और हम जहाँ रहते हैं, वहीं आपके धर्मी सत्संगी बन सकते हैं।”

• • • ■ • • •

1
शुभ संदेश सबके लिए है

1यह पत्र मुक्तिदाता येशु के सेवक* पौलुस की ओर से है। परमात्मा
ने अपना राजदूत बनाने के लिए मुझे चुना और उनका शुभ संदेश सुनाने
के लिए नियुक्त किया है। 2परमात्मा ने बहुत समय पहले ही अपने
प्रवक्ताओं द्वारा परमात्मा-ग्रंथ में इस शुभ संदेश का वादा किया था।
3-4यह शुभ संदेश उनके पुत्र, हमारे मुक्तिदाता प्रभु येशु के बारे में है।
प्रभु येशु मनुष्य के रूप में, राजा दाविद के परिवार से थे, पर मरने के
बाद पवित्र आत्मा की शक्ति से ज़िन्दा होकर परमात्मा के शक्तिशाली
पुत्र कहलाए*। 5प्रभु येशु के द्वारा हमें कृपा और राजदूत-पद मिला कि
हम दुनिया के हर समाज के लोगों को प्रभु येशु की शरण में लाएँ ताकि
वे उन पर आस्था रखें, उनके आज्ञाकारी बनें और प्रभु येशु के नाम
को ऊँचा उठाएँ। 6तुम भी इन वफादार और आज्ञाकारी भक्तों में से हो,
क्योंकि मुक्तिदाता येशु ने तुम्हें भी अपनी शरण में बुलाया है।
7यह पत्र मैं उन सबके नाम लिख रहा हूँ जो रोम शहर में परमात्मा के
प्यारे हैं और जिन्हें पवित्र भक्त बनने के लिए चुना गया है। तुम्हें हमारे
पिता परमात्मा और हमारे मुक्तिदाता प्रभु येशु से कृपा और शांति मिले।

---

* **1:1** *सेवक* - या, “गुलाम”   * **1:3-4** *परमात्मा के शक्तिशाली पुत्र कहलाए* - या, “वह जिसे परमात्मा ने सभी समाजों का शक्तिशाली शासक नियुक्त किया है।”

[8]मैं पत्र लिखने की शुरुआत, मुक्तिदाता येशु द्वारा, तुम सबके लिए
अपने परमात्मा को धन्यवाद देते हुए करता हूँ, क्योंकि तुम्हारी आस्था
की चर्चा सारे संसार में फैल रही है। [9]परमात्मा ने देखा है कि मैं कैसे
तुम्हारे लिए हमेशा प्रार्थना करता हूँ। मैं पूरे मन से* परमात्मा की सेवा
करता हूँ और उनके बेटे के शुभ संदेश का प्रचार करता हूँ।
[10]प्रार्थना करते समय, मैं हमेशा विनती करता हूँ कि परमात्मा हमारी
मुलाकात जल्दी कराएँ। [11]मैं तुमसे इसलिए मिलना चाहता हूँ कि तुम्हें
आत्मिक वरदान दे सकूँ जिससे तुम मज़बूत बन सको, और [12]जब मैं तुम्हारे
पास आऊँ तब हम एक दूसरे की आस्था से हौसला पाएँ। [13]भक्त भाइयो
और बहनो, मैं नहीं चाहता कि तुम इससे अनजान रहो कि मैंने बार-बार
तुम्हारे पास आने की योजना बनाई थी, परंतु अब तक मेरी योजना में
बाधा पड़ रही है। मैं रोम शहर के बहुत से अलग-अलग समाज के लोगों
को प्रभु येशु की शरण में लाना चाहता हूँ* जैसा कि मैंने कई अन्य जगहों
में किया है। [14-15]इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि लोग ग्रीक समाज से हैं या
किसी और समाज से, ज्ञानी हैं या अज्ञानी। मुझे शुभ संदेश सबको सुनाना
है, इसलिए मैं तुम्हारे पास रोम शहर में आने की बहुत इच्छा कर रहा हूँ।
[16]मुझे शुभ संदेश पर गर्व है,* क्योंकि इसमें परमात्मा की शक्ति है
जिससे मुक्ति प्राप्त होती है। जो कोई भी प्रभु येशु पर आस्था रखता है,
पहले यहूदी समाज के लोगों को फिर अन्य समाज के लोगों को मुक्ति
मिलेगी। [17]परमात्मा किस तरह हमारे बुरे कर्मों का खाता मिटा देते हैं
और हमें धर्मी बनाते हैं, इसका खुलासा शुभ संदेश में किया गया है
और यह पूरी तरह से आस्था पर आधारित है। परमात्मा-ग्रंथ में लिखा
है, "धर्मी भक्तों को परमात्मा पर आस्था रखने से मोक्ष मिलेगा।"*

मनुष्य का अधर्म

[18]परंतु जो अधर्म से सच का गला घोटते हैं, परमात्मा अपने सिंहासन
से उनके सारे बुरे कर्मों और अधर्म को देखकर क्रोधित हैं। [19]परमात्मा

---

* **1:9** *पूरे मन से* - या "मेरी आत्मा में" * **1:13** *बहुत से अलग-अलग समाज के लोगों को प्रभु येशु की शरण में लाना चाहता हूँ* - या, "कुछ फल उनमें से जो यहूदी समाज से नहीं हैं" (योहन 15:16देखें) * **1:16** *मुझे शुभ संदेश पर गर्व है* - या, "मुझे शुभ संदेश से कोई शर्म नहीं है।" * **1:17** *मोक्ष मिलेगा* - या, "उनके जीवन का दीपक होगी।" **1:17** हबक्कूक 2:4

के बारे में जो कुछ जाना जा सकता है, वह इन बुरे लोगों को पता
है, क्योंकि स्वयं परमात्मा ने उन पर प्रकट किया है। [20]परमात्मा
के अदृश्य गुण अर्थात् उनकी अंतहीन शक्ति और दिव्य स्वभाव,
संसार के आरंभ से ही उनकी सृष्टि में साफ दिखाई पड़ते हैं। इसलिए
उन लोगों के पास इन चीज़ों को न समझने का कोई बहाना नहीं है।
[21]परमात्मा के बारे में जानते हुए भी वे परमात्मा का गुणगान नहीं करते
और न उन्हें धन्यवाद देते हैं। उनके विचार बेकार हैं और उनके मूर्ख
दिमाग अंधेरे में हैं। [22]वे अपने को बुद्धिमान समझते हैं, परंतु वे मूर्ख हैं।
[23]वे तेजस्वी और सनातन परमात्मा की भक्ति तो नहीं करते, परंतु वे
नाशवान मनुष्यों, पशु-पक्षियों और साँपों की मूर्तियों की भक्ति करने
लगे।

[24]इस कारण परमात्मा ने उन्हें उनके मन की बुरी इच्छाओं पर छोड़
दिया। वे आपस में ही अनैतिक यौन सम्बन्ध बनाकर अपने शरीर को
अपवित्र करने लगे। [25]ऐसे लोगों ने परमात्मा के सच के स्थान पर झूठ
को अपनाया। उन्होंने सूर्य, चाँद, सितारों, नदियों, पहाड़ों, जानवरों
और पेड़-पौधों * की भक्ति और सेवा की, परंतु इन सब के बनाने वाले
विधाता की नहीं जो हमेशा गुणगान के योग्य हैं। सत्य परमात्मा की
जय!

[26]इसलिए परमात्मा ने उन्हें उनकी शर्मनाक वासनाओं पर छोड़
दिया, यहाँ तक कि महिलाएँ प्राकृतिक सम्बन्ध को छोड़ आपस में ही
अनैतिक यौन सम्बन्ध बनाने लगीं। [27]इसी प्रकार पुरुष भी महिलाओं
के साथ यौन सम्बन्ध बनाने को छोड़, आपस में सम्बन्ध बनाने की
वासना में जलने लगे। इन लोगों ने अन्य पुरुषों के साथ शर्मनाक काम
किए हैं और परिणामस्वरूप अपने बुरे कर्मों के लिए अपने जीवनों में
परमात्मा की सज़ा भुगत रहे हैं।

[28]क्योंकि वे मानते थे कि परमात्मा को जानना ज़रूरी नहीं है, तो
परमात्मा ने भी उन्हें उन्हीं के निकम्मे मन के सहारे छोड़ दिया, जिससे
वे गलत काम करने लगे। [29]वे हर प्रकार के अधर्म, +अवैध सम्बन्ध,

---

*** 1:25** *सूर्य, चाँद, सितारों, नदियों, पहाड़ों, जानवरों और पेड़-पौधों* - या, “चीजें जो परमात्मा ने बनाई हैं।”

दुष्टता, लालच और बुरी भावना से भर गए, तथा जलन, हत्या,
वाद-विवाद, धोखा देने और नफरत में डूब गए। वे चुगलखोर, [30]दूसरों
की बुराई करने वाले, परमात्मा से नफरत करने वाले, ढीठ, घमंडी,
बड़ बोले, पाप करने के नए तरीकों को ढूँढने वाले, माता-पिता का
कहना न मानने वाले, [31]मूर्ख, वादा तोड़ने वाले, कठोर, और बेरहम
हो गए। [32]वे जानते हैं कि परमात्मा न्याय करेंगे और ऐसे बुरे कर्म करने
वाले मृत्यु की सज़ा के योग्य हैं। फिर भी न केवल वे स्वयं ऐसे काम
करते हैं, परंतु इस प्रकार के बुरे काम करने वालों से सहमत होकर
उनको बढ़ावा भी देते हैं।

2

परमात्मा अच्छे और बुरे कर्मों का न्याय करेंगे

[1]तो तुम पापी लोगों की निंदा करते हो, लेकिन तुम भी उतने ही
बुरे हो, और तुम्हारे पास कोई बहाना नहीं है! जब तुम कहते हो कि
दूसरे दुष्ट हैं और उन्हें सज़ा मिलनी चाहिए, तो तुम खुद की निंदा करते
हो, क्योंकि तुम भी वही काम कर रहे हो। [2]हम जानते हैं कि ऐसा
करने वालों को परमात्मा सज़ा ज़रूर देंगे। [3]ओ भले मानस! क्या तुम्हें
इस बात का पक्का भरोसा है कि परमात्मा तुम्हें सज़ा नहीं देंगे जबकि
तुम भी बिल्कुल वैसे ही काम करते हो जैसे काम करने के आरोप
तुम लोगों पर लगाते हो? [4]शायद तुमने परमात्मा की अति कृपा,
सहनशीलता और सबर को बहुत छोटा समझ लिया है। क्या तुम नहीं
जानते कि परमात्मा की कृपा तुम्हें अपने बुरे कर्मों से पश्चाताप करने
का अवसर देती है?

[5]परंतु क्योंकि तुम ढीठ हो और अपने बुरे कर्मों से पश्चाताप करने
से इंकार करते हो, तुम अपने खाते में भयानक दंड जमा कर रहे हो।
वह दिन नज़दीक आ रहा है जब तुम्हें परमात्मा के क्रोध का सामना
करना पड़ेगा, और वह इंसाफ करेंगे। [6]परमात्मा हर एक व्यक्ति को
उसके कर्मों के अनुसार फल देंगे। [7]जो लगातार अच्छे काम करते हुए
परमात्मा से तेज, आदर और मोक्ष की खोज में हैं, उनको परमात्मा

2:6 भजन शास्त्र 62:12; ज्ञान की बातें 24:12

अवश्य मोक्ष प्रदान करेंगे। 8परंतु जो स्वार्थी जीवन जीते हैं और सच
को स्वीकार न करके अधर्म के मार्ग पर चलते हैं, उन पर परमात्मा
का क्रोध भड़केगा। 9बुरे काम करने वाले हर एक व्यक्ति पर, चाहे
वह यहूदी समाज का हो या किसी भी अन्य समाज का, उस पर कष्ट
और संकट पड़ेगा ही। 10किंतु अच्छे काम करने वाले हर एक व्यक्ति
को, चाहे वह यहूदी समाज का हो या किसी भी समाज का, उसे तेज,
आदर और शांति प्राप्त होगा ही 11क्योंकि परमात्मा मुँह देखा न्याय नहीं
करते।

12वे लोग जो यहूदी समाज से नहीं हैं और मोशे के नियम और शिक्षा
के बारे में नहीं जानते हैं, उन्हें फिर भी गलत काम करने की सज़ा
ज़रूर दी जाएगी। और यहूदी समाज के लोग, जिनके पास मोशे के
नियम हैं, उनका नियमों के अनुसार इन्साफ किया जाएगा अगर वे
उनका पालन करने से चूकेंगे। 13क्योंकि परमात्मा की नज़र में धर्मी
केवल वे नहीं जो नियमों के सुनने वाले हैं, परंतु असली धर्मी वे हैं
जो इन नियमों का पालन करते हैं। 14जो लोग यहूदी समाज के नहीं हैं,
जिनके पास मोशे के नियम नहीं है, वे उन नियमों का पालन करते हैं
बिना यह जाने कि वे मोशे के नियम और शिक्षा के रूप में लिखे गए
हैं। वे इन नियमों के बारे में कुछ नहीं जानते, लेकिन उनके मन में इस
बात की समझ है कि अच्छा और बुरा क्या है। 15उन्होंने अपने मन की
आवाज़ का पालन ऐसे किया मानो वे मोशे के नियम और शिक्षा का
पालन कर रहे हों। और उनके मन की आवाज़ बताएगी कि उन्हें माफ़ी
मिलेगी या सज़ा। 16यह उस दिन और साफ हो जाएगा जब परमात्मा,
मुक्तिदाता येशु के द्वारा, लोगों के मन में छुपी बातों का न्याय करेंगे,
जैसा मेरा शुभ संदेश बताता है।

धार्मिक दिखावे से मन की सच्चाई उत्तम है

17तुम में से कुछ अपने को यहूदी कहते हो। तुम्हें मोशे के नियम और
शिक्षा पर भरोसा है और तुम इस बात को सोच कर गर्व करते हो कि
परमात्मा तुमसे खुश हैं। 18तुमने इन नियमों से सीखा है कि परमात्मा
की तुम्हारे जीवन में क्या इच्छा है और अच्छाई का चुनाव कैसे करना
है। 19तुम्हें इस बात का भी पक्का पता है कि तुम अंधों को रास्ता दिखाने

वाले हो और जिनके मन अंधकार में हैं उनके लिए प्रकाश हो। [20]और
क्योंकि मोशे के नियम और शिक्षा में ज्ञान और सच्चाई है, इसलिए
तुमको लगता है कि तुम मूर्खों को समझ दे सकते हो और युवाओं को
सिखा सकते हो।

[21]परंतु तुम जो दूसरों को शिक्षा देते हो, क्या स्वयं तुम उसका पालन
करते हो? तुम प्रचार करते हो, "चोरी मत करो," पर क्या तुम स्वयं
चोरी नहीं करते हो? [22]तुम कहते हो, "शादी के बाहर शारीरक सम्बन्ध
नहीं रखना चाहिए," परंतु क्या तुम वास्तव में इसका पालन करते हो?
तुम मूर्तियों का घोर विरोध करते हो, लेकिन वास्तव में क्या तुम मंदिरों
को लूटना सही मानते हो? [23]तुम मोशे के नियम और शिक्षा को अपना
गौरव मानते हो, किंतु तुम इनको तोड़कर परमात्मा का अपमान करते
हो। [24]जैसा परमात्मा-ग्रंथ में लिखा है, "दूसरे समाज के लोग परमात्मा
का अपमान करेंगे जब वे तुम यहूदियों को बुराई करते हुए देखते हैं।"

[25]यहूदी लोगो, यह तुम्हारे लिए अच्छा है कि तुम मोशे के नियम
और शिक्षा का पालन करो और चीरा-संस्कार कराओ। लेकिन अगर
तुम पूरे नियमों का पालन नहीं करते हो, तो तुम्हारा चीरा-संस्कार
करवाना बेकार है, और तुम अन्य लोगों के मुकाबले में बेहतर नहीं
हो। [26]इसी प्रकार यदि किसी ने यहूदी चीरा-संस्कार नहीं भी कराया
है परंतु फिर भी मोशे के नियम और शिक्षा का पालन करता है, तो वह
चीरा-संस्कार पाए हुए मनुष्य के समान ही है। [27]जिन्होंने चीरा-संस्कार
नहीं लिया है परंतु नियमों का पूरी तरह से पालन करते हैं, वे तुम
यहूदियों पर ऊँगली उठाएँगे, क्योंकि तुम चीरा-संस्कार प्राप्त करके भी
लिखित नियमों को तोड़ते हो।

[28]केवल पहनावे, जीवन शैली और शारीरिक चीरा-संस्कार करवाने
से ही तुम असली यहूदी नहीं बन सकते। [29]किंतु असली यहूदी वही
है जिसका मन यहूदी है। असली चीरा-संस्कार पवित्र आत्मा द्वारा मन
से बुराई को हटाना है, न कि केवल एक रिवाज का करना। मन का
चीरा-संस्कार लिया हुआ व्यक्ति अपनी तारीफ परमात्मा से चाहता है,
लोगों से नहीं।

2:24 यशायाह 52:5

3

परमात्मा के पास मनुष्य के हर तर्क का जवाब है

1तो यहूदी होने से क्या लाभ? या चीरा-संस्कार लेने का क्या फायदा
हुआ? 2अगर देखा जाए तो बहुत लाभ हुआ, पहला तो यह कि
परमात्मा ने यहूदियों को परमात्मा-ग्रंथ के रूप में अपनी वाणी दी।
3यह सच है कि कुछ यहूदियों ने परमात्मा-ग्रंथ के संदेश पर
विश्वास नहीं किया। वे विश्वासयोग्य नहीं थे, परंतु परमात्मा हमेशा
विश्वासयोग्य हैं। 4भले ही हर एक व्यक्ति झूठ बोले, लेकिन परमात्मा
हमेशा सच बोलते हैं। परमात्मा-ग्रंथ में इस प्रकार लिखा है कि

परमात्मा आपके शब्द सच साबित होंगे
और आप हमेशा उन लोगों के खिलाफ जीतेंगे
जो आप पर आरोप लगाते हैं।

5लेकिन कुछ लोगों का तर्क है कि जब हम अधर्म के काम करते हैं,
तो परमात्मा के पास हमारे लिए अपना धर्मी स्वभाव दिखाने का एक
अच्छा अवसर होता है। तो इस तर्क का जवाब क्या है? कुछ लोग
मुर्खता भरी बात कहते हैं कि परमात्मा को हमें दंड नहीं देना चाहिए
क्योंकि हमारा पाप उन्हें हमारे लिए अच्छा करने का अवसर देता है।
6लेकिन ऐसा पूरी तरह गलत है! यदि परमात्मा सारे संसार का न्याय
करेंगे, तो बुराई करने वालों को दंड देना उनका काम है, वरना न्याय
कैसे होगा। 7तो, कुछ लोग कहते हैं, "यदि मेरे पापों ने परमात्मा को
मेरे साथ भला करने का अवसर दिया है और इसके लिए उनका और
गुणगान किया जाए, तो परमात्मा मुझे दंड क्यों देते हैं?" 8तब वे कहेंगे,
"आओ, कुछ बुरे काम करें कि परमात्मा हमें माफ़ करके दिखाएँ कि
वह कितने अच्छे हैं।" जो लोग कहते हैं कि हम इस प्रकार की शिक्षा
दे रहे हैं, वे गलत हैं और इसके लिए उन्हें सज़ा मिलनी चाहिए!

अधर्मी के लक्षण

9इन सब बातों का मतलब क्या है? परमात्मा की नज़र में क्या हम
यहूदी समाज के लोग दूसरों के मुकाबले बेहतर स्थिति में हैं? बिल्कुल

3:4 भजन शास्त्र 51:4

नहीं! जैसा कि मैंने कहा था कि यहूदी और दूसरे समाज के लोग
सब-के-सब पापी हैं। [10]जैसा कि परमात्मा-ग्रंथ में लिखा है कि
कोई भी धर्मी नहीं है, एक भी नहीं।
[11] कोई भी व्यक्ति बुद्धिमान नहीं है
कोई भी सच्चे मन से परमात्मा की खोज नहीं करता।
[12] सब-के-सब मार्ग से भटक गए हैं
सभी निकम्मे हो गए हैं।
कोई भी भलाई नहीं करता, एक भी नहीं।
[13] उनकी बातों से छल-कपट की बदबू आती है
और उनके होंठों में साँप का ज़हर है।
[14]उनके मुँह शाप और कड़वाहट से भरे हैं
[15] और उनके पैर हत्या करने के लिए दौड़ पड़ते हैं।
[16] वे लोगों के मार्ग में विनाश और दुख बिछाते हैं।
[17]वे नहीं जानते कि शांति से जीवन कैसे बिताया जाता है
[18] और वे परमात्मा से नहीं डरते।
[19]हम जानते हैं कि मोशे के नियम और शिक्षा में जो कुछ लिखा है,
वह उन्हीं के लिए लिखा है जिन्हें उसका पालन करना ज़रूरी है। अब
किसी व्यक्ति के पास यह बहाना नहीं है, और सारे संसार के लोगों
को अपने कर्मों का हिसाब परमात्मा को देना होगा। [20]क्योंकि इन
नियमों और शिक्षाओं का केवल पालन करने की कोशिश से कोई भी
व्यक्ति परमात्मा के सामने अपने आप को पाप के कलंक से निर्दोष
साबित नहीं कर सकता। कारण यह है कि ये शिक्षाएँ और नियम
केवल हमें हमारे पाप दिखा सकते हैं।
[21]लेकिन अब, जब हम मोशे के नियमों और शिक्षाओं का पालन करने
में असमर्थ हैं, तब भी एक रास्ता प्रकट हो गया है जिससे परमात्मा
हमारे बुरे कर्मों के खाते को मिटाकर हमें धर्मी बना सकते हैं। इस रास्ते
के प्रकट होने का वादा मोशे की पुस्तकों और परमात्मा के प्रवक्ताओं
द्वारा बहुत पहले ही किया जा चुका था। [22]वह यह है कि यदि हम

3:12 भजन शास्त्र 14:1; 53:1-3 **3:13** भजन शास्त्र 5:9; 140:3 **3:14** भजन शास्त्र 10:7
3:17 यशायाह 59:7-8 **3:18** भजन शास्त्र 36:1 **3:20** भजन शास्त्र 143:2

मुक्तिदाता येशु पर आस्था रखें, तो चाहे हम किसी भी समाज से हों,
हमारे बुरे कर्मों का खाता मिट सकता है और परमात्मा हमें धर्मी बना
देंगे। [23]सबने पाप किया है और परमात्मा से मिलने वाले तेज से दूर हो
गए हैं। [24]फिर भी परमात्मा घोषणा करते हैं कि उन्होंने अपनी महान
कृपा से हमारे बुरे कर्मों के खाते को मिटा दिया है और मुक्तिदाता
येशु के द्वारा हमें मुक्ति का वरदान दिया है। [25]परमात्मा ने स्पष्ट रूप से
दिखाया* कि मुक्तिदाता येशु हमारे पापों की बलि के रूप में क्रूस पर*
मरे और यदि हम मुक्तिदाता और उनके बलि चढ़ने पर आस्था रखते
हैं तो परमात्मा हमारे बुरे कर्मों का खाता मिटा देते हैं।
परमात्मा जो भी करते हैं बिना भेदभाव से करते हैं। इसलिए
उन्होंने मुक्तिदाता येशु के बलि होने के समय का इंतजार किया और
मुक्तिदाता के आने से पहले रहने वाले लोग जो पाप कर रहे थे उन्हें
दंडित नहीं किया। [26]ऐसा परमात्मा ने इसलिए किया क्योंकि वह सही
समय का इंतज़ार कर रहे थे और अब वह समय आ गया था कि बुरे
कर्मों के खाते को मिटाने की अपनी योजना में हर एक को शामिल
करें। इससे पता चलता है कि परमात्मा सब कुछ बिना भेदभाव से
करते हैं और वह बुरे कर्मों के खाते को मिटा देंगे और मुक्तिदाता येशु
पर आस्था रखने वाले सभी लोगों को धर्मी बना देंगे।
[27]तो फिर हमारे लिए घमंड करने के लिए क्या बचा है? एक भी बात
नहीं! क्या हम इस बात पर घमंड करें कि हम कुछ नियमों का पालन
करते हैं? नहीं! हमें नियमों का पालन करने से मुक्ति नहीं मिलती, हमें
मुक्ति आस्था रखने से मिलती है। [28]क्योंकि हमारा मानना है कि व्यक्ति
मोशे के नियम और शिक्षा का पालन करने से नहीं, परंतु परमात्मा में
उसकी आस्था के आधार उसके बुरे कर्मों का खाता मिट जाता है।
[29]क्या परमात्मा बस यहूदियों के ही हैं? क्या वह दूसरे समाज के
लोगों के नहीं हैं? हाँ, वह दूसरे समाज के लोगों के भी हैं। [30]परमात्मा

---

* **3:25** *परमात्मा ने स्पष्ट रूप से दिखाया* - मुक्तिदाता को क्रूस पर सबके सामने चढ़ाया गया। यह यहूदी पुरोहित के विपरीत था जो मंदिर के भीतरी भाग में बंद दरवाजों के पीछे छुपकर पाप के लिए बलि चढ़ाते थे। * **3:25** *क्रूस पर* - (या, “दया आसन के रूप में”)। पौलुस ने प्रभु येशु के मृत्यु के स्थान, अर्थात् क्रूस को “दया आसन” कहा है। यहीं पर वर्ष के सबसे पवित्र दिन (योम किप्पुर) पर पापों की क्षमा के लिए यहूदी लोगों का सबसे पवित्र बलि चढ़ाया जाता था। इब्रानियों 9:5 भी देखें।

एक है, और वह यहूदी लोगों को* उनकी आस्था के आधार पर धर्मी
बनाएँगे तथा अन्य समाज के लोगों को* भी उनकी आस्था के आधार
पर धर्मी बनाएँगे। [31]क्या इसका मतलब यह है कि अगर हमारे मनों
में आस्था है तो हमें मोशे के नियम और शिक्षा का पालन नहीं करना
चाहिए? नहीं, हमें उनका का पालन करते रहना चाहिए।

4

कर्म काफी नहीं हैं

[1]इन सब चीज़ों का ध्यान रखते हुए, हमारे इज़राएल देश के लोगों
के कुलपिता अब्राहम के बारे में क्या कहें? [2]यदि परमात्मा कुलपिता
अब्राहम को उसके कर्मों के आधार पर धर्मी बनाते तो वह घमंड
कर सकता था। लेकिन परमात्मा की नज़र में अब्राहम के पास घमंड
करने का कोई आधार नहीं था। [3]क्योंकि परमात्मा-ग्रंथ में लिखा है,
"अब्राहम ने परमात्मा पर आस्था रखी, इसलिए परमात्मा ने उसे धर्मी
माना"

[4]काम करने वाले मज़दूरों को मज़दूरी देना उन पर अहसान करना
नहीं है, परंतु मज़दूरी पाना उनका हक माना जाता है। [5]लेकिन लोग
वास्तव में ऐसा कोई कर्म नहीं कर सकते जिसकी मज़दूरी के बदले
में उनके बुरे कर्मों के खाते को मिटाया जा सके। परंतु जब बुरे लोग
परमात्मा पर आस्था रखना शुरू कर देते हैं, तो केवल उनकी आस्था
को देखकर परमात्मा उन्हें धर्मी मान लेते हैं। [6]राजा दाविद ने भी इस
बारे में बात की थी जब उसने उन लोगों की खुशी के बारे में बताया
जिनको परमात्मा अच्छे कर्म किए बिना धर्मी मान लिया। [7]राजा
दाविद ने कहा कि

यह उन लोगों के लिए कितनी खुशी की बात है
जिनके बुरे कर्मों को माफ कर दिया गया हो
और जिनके बुरे कर्म परमात्मा ने ढक दिए हों।
[8]कितनी खुशी की बात है यह उस व्यक्ति के लिए

---

* **3:30** *यहूदी लोगों को* - या, "चीरा संस्कार लिए लोगों को" * **3:30** *अन्य समाज के लोगों को* - या, "जो लोग चीरा संस्कार नहीं करते हैं" **4:3** उत्पत्ति 15:6

जिसके बुरे कर्मों का हिसाब प्रभु परमात्मा नहीं लेंगे।

कुलपिता अब्राहम की आस्था

[9]तो क्या यह खुशी की बात केवल यहूदी समाज के लोगों के लिए
ही है या दूसरे समाज के लिए* भी है? हमारा फिर से कहना है,
"अब्राहम ने परमात्मा पर आस्था रखी, इस कारण परमात्मा ने उसे
धर्मी माना।" [10]तो ऐसा उनके साथ कब हुआ? चीरा-संस्कार प्राप्त
करने के बाद या पहले? जवाब है, पहले। [11]अब्राहम के चीरा-संस्कार
लेने से पहले ही उनकी आस्था परमात्मा में थी। और, अब्राहम ने जब
चीरा-संस्कार लिया भी नहीं था, परमात्मा ने उन्हें धर्मी मान लिया था।
अब्राहम का चीरा-संस्कार बाद में हुआ जो एक धार्मिक परंपरा थी। तो
वास्तव में, अब्राहम उन सभी लोगों के आत्मिक पिता हैं जो परमात्मा
में अपनी आस्था के आधार पर धर्मी मान लिए गए हैं, भले ही उन्होंने
कभी चीरा-संस्कार नहीं किया हो। [12]यह अब्राहम को उन लोगों का भी
आत्मिक पिता बनाता है जिन्होंने अब्राहम के समान चीरा-संस्कार प्राप्त
किया है और उनकी परमात्मा में वैसी ही आस्था है जैसी अब्राहम की
थी।

[13]परमात्मा ने अब्राहम और उनकी आने वाली पीढ़ियों से वादा किया
था कि वह उनके द्वारा दुनिया के हर समाज के लोगों को आशीर्वाद
देंगे। यह वादा उनसे इसलिए नहीं किया गया था कि उन्होंने मोशे के
नियम और शिक्षा का पालन किया था, बल्कि इसलिए कि परमात्मा
ने उन्हें उनकी आस्था के आधार पर धर्मी माना। [14]यदि लोग सिर्फ मोशे
के नियम और शिक्षा का पालन करने के बल पर आशीर्वाद पाते तो
उनकी आस्था खोखली और परमात्मा की प्रतिज्ञा का कोई अर्थ नहीं
होता। [15]फिर भी जब लोग नियम और शिक्षा का पालन नहीं करते तो
परमात्मा का क्रोध भड़क जाता है। लेकिन जहाँ कोई नियम ही नहीं हैं,
उनका तोड़ना भी नहीं बनता।

[16]परमात्मा की योजना का आधार आस्था है, जिससे सबकुछ
परमात्मा की कृपा पर निर्भर रहे। यह वादा न केवल उन यहूदी

4:8 भजन शास्त्र 32:1-2   * **4:9** *दूसरे समाज के लिए* - या, "चीरा-संस्कार नहीं करते हैं,"

समाज के लोगों के लिए है जो अपने नियम और शिक्षा का पालन
करते हैं, बल्कि यह उन सब के लिए भी है जो अब्राहम की तरह
परमात्मा में आस्था रखते हैं। अब्राहम हम सबके आत्मिक पिता हैं।
[17]परमात्मा-ग्रंथ में लिखा है कि अब्राहम दुनिया के बहुत से समाजों के
कुलपिता बनाए जाएँगे। यह वादा अब्राहम से किया गया था क्योंकि
उनकी आस्था परमात्मा पर थी जो मरे हुए लोगों को जीवन प्रदान करते
हैं और जहाँ कुछ भी नहीं होता, वहाँ उनके केवल कहने भर से ही
नई-नई चीज़ों का जन्म हो जाता है।
[18]परमात्मा ने अब्राहम को बहुत से वंशज देने का वादा किया। और
जब अब्राहम को लगा कि यह वादा पूरा होना असंभव है, तब भी
उन्होंने परमात्मा पर भरोसा रखा और दुनिया के बहुत से समाज के
लोगों के कुलपिता बन गए। [19]और अब्राहम की आस्था कमज़ोर नहीं
हुई थी जबकि वह जानते थे कि बाप बनने के लिए सौ साल की उम्र
बहुत ज़्यादा है और उनकी पत्नी सारा की कोख भी बंद हो चुकी है।
[20]कुलपिता अब्राहम ने परमात्मा के वादे पर कभी शक नहीं किया,
परंतु उन्होंने अपनी आस्था को मज़बूत बनाए रखा और परमात्मा का
गुणगान किया। [21]अब्राहम को पूरा भरोसा था कि जिस बात की परमात्मा
ने प्रतिज्ञा की है वह उसे पूरा करेंगे। [22]इस कारण परमात्मा ने अब्राहम
को धर्मी माना। [23]ये शब्द “परमात्मा ने अब्राहम को धर्मी माना” केवल
कुलपिता अब्राहम के लिए ही नहीं लिखे गए [24]परंतु हमारे लिए भी हैं।
यदि हम परमात्मा पर आस्था रखें जिन्होंने प्रभु येशु की मौत होने के बाद
उन्हें ज़िन्दा किया है तो परमात्मा हमें धर्मी मान लेंगे। [25]परमात्मा ने प्रभु
येशु को हमारे बुरे कर्मों के खाते को मिटाने के लिए बलि के रूप में दे
दिया और परमात्मा ने उन्हें ज़िन्दा कर दिया ताकि हम धर्मी बन सकें।

5

आस्था का मीठा फल

[1]इसलिए, हमारे मुक्तिदाता प्रभु येशु पर आस्था के आधार पर, परमात्मा ने
हमारे बुरे कर्मों के खाते को मिटा दिया है और हमें धर्मी बना दिया है, तथा

4:18 उत्पत्ति 15:5 **4:23** उत्पत्ति 15:6

हमारा परमात्मा के साथ मेल-मिलाप करा दिया है।+ 2क्योंकि मुक्तिदाता येशु
के द्वारा हमें परमात्मा की कृपा आस्था से+ प्राप्त हुई, इस कृपा की छाया
हम पर बनी हुई है। हमें इस बात की बहुत खुशी और पूरा भरोसा है कि
परमात्मा हमें आने वाले समय में अपने तेज से भर देंगे। 3इतना ही नहीं, पर
हम दुख में भी खुशी मनाते हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि दुख हमारी सहन
शक्ति बढ़ाने में मदद करता है, 4और सहन शक्ति हमारे चरित्र को मज़बूत
बनाती है और मज़बूत चरित्र से हमें मुक्ति प्राप्त करने की आशा मिलती है।
5और यह आशा हमें निराश नहीं होने देती, क्योंकि परमात्मा ने जो पवित्र
आत्मा हमें दी है, उसके द्वारा उन्होंने अपना प्रेम हमारे दिल में उंडेला है।

परमात्मा से मेल-मिलाप का माध्यम प्रभु येशु

6जब हमारा पाप के चुंगल से निकलना असंभव हो गया, तभी ठीक
समय पर मुक्तिदाता ने हम अधर्मियों के लिए अपने प्राण न्योछावर कर
दिए। 7शायद ही कोई किसी नेक और भले इंसान के लिए अपनी जान
देने की सोचे। 8परंतु परमात्मा ने हमारे प्रति अपना प्रेम इस प्रकार साबित
किया है कि जब हम पापी ही थे तब मुक्तिदाता येशु ने हमारे लिए अपने
प्राण न्योछावर किए। 9यदि हम मुक्तिदाता के बलि के खून द्वारा धर्मी
बनाए गए हैं तो मुक्तिदाता के द्वारा हम अच्छे और बुरे कर्मों के न्याय
के दिन परमात्मा के क्रोध से बच जाएँगे। 10जब हम अभी भी परमात्मा के
दुश्मन थे* तो उन्होंने अपने पुत्र की बलि के द्वारा हमारे साथ मेल-मिलाप
किया। इसके आलावा हमारे लिए और भी बहुत कुछ है। अब जब हमारा
मेल-मिलाप परमात्मा के साथ हो गया है, तो मुक्तिदाता येशु के जीवित
होने से हमें मुक्ति भी मिलेगी! 11हमारे मुक्तिदाता प्रभु येशु ने परमात्मा के
साथ हमारा मेल-मिलाप कराया है। इसलिए हम परमात्मा में मगन हैं।

आदम द्वारा मृत्यु, मुक्तिदाता द्वारा मोक्ष

12पृथ्वी के पहले मनुष्य आदम ने पाप किया और इस पहले पाप ने
संसार में पाप को जन्म दिया और इस पाप के कारण ही मृत्यु भी आई।

---

* **5:10** *जब हम अभी भी परमात्मा के दुश्मन थे* - या, “जब हम परमात्मा की आज्ञाओं के विरुद्ध चलते थे और परमात्मा हमारे पाप के कारण हमारे विरुद्ध थे”

इसलिए सभी को मरना ही है क्योंकि सभी ने पाप किया है। [13]मोशे के
नियम और शिक्षा के आने से पहले भी संसार में पाप था। परंतु पाप का
कोई हिसाब-किताब नहीं रखा जा सकता था, क्योंकि उस समय मोशे के
नियम और शिक्षा नहीं थी। [14]तो भी आदम के समय से लेकर परमात्मा
के प्रवक्ता मोशे के समय तक के सभी लोगों मृत्यु के द्वार से गुज़रकर
जाना ही होता था। हालाँकि सभी ने आदम जैसा पाप नहीं किया था।
कुछ मायनों में आदम मुक्तिदाता के समान थे जो बाद में आए। [15]परंतु
परमात्मा की कृपा के वरदान और आदम के पाप में कोई समानता
नहीं थी। उस एक मनुष्य के पाप के द्वारा बहुत से लोगों के जीवन में
मृत्यु आई। दूसरी ओर अद्भुत तरीके से, एक मनुष्य मुक्तिदाता येशु
ने परमात्मा की कृपा के वरदान के द्वार को बहुत से लोगों के लिए
खोल दिया। [16]आदम के पाप और परमात्मा के वरदान में बहुत अंतर
है। आदम ने दुनिया का सबसे पहला पाप किया जिसके कारण दंड
देने का रास्ता खुल गया। परंतु परमात्मा के वरदान के कारण हमारे बुरे
कर्मों के लम्बे चौड़े खाते को मिटाने का रास्ता खुल गया, और हम
परमात्मा के धर्मी भक्त बन जाएँगे। [17]एक मनुष्य के पाप के कारण
मौत का साम्राज्य आया, और एक ही मनुष्य मुक्तिदाता येशु द्वारा मोक्ष
का साम्राज्य भी आया। और जिन लोगों को परमात्मा की भरपूर कृपा
और धर्मी जीवन का उपहार प्राप्त हुआ है, वे मोक्ष के उस साम्राज्य में
मुक्तिदाता के साथ शासन करेंगे।*

[18]तो आदम के एक पाप ने सभी को दण्ड के योग्य बना दिया, परंतु
मुक्तिदाता येशु के एक धर्मी काम के द्वारा सभी लोग अपने बुरे कर्मों
के खाते को मिटाने, धर्मी भक्त बनने और मोक्ष प्राप्त करने के योग्य
बनाये गए हैं। [19]आदम ने परमात्मा की आज्ञा नहीं मानी जिसके कारण
कई लोग पापी बन गए। परंतु प्रभु येशु ने परमात्मा की आज्ञा मानी
जिसके कारण बहुत से लोग धर्मी बनाए जाएँगे।

[20]आदम के बहुत साल बाद परमात्मा ने मोशे के नियम और शिक्षा
का परिचय कराया जिससे पाप का अहसास बढ़ गया। जब पाप

---

* **5:17** *वे मोक्ष के उस साम्राज्य में मुक्तिदाता के साथ शासन करेंगे* - या, “वे मुक्तिदाता येशु के माध्यम से जीवन में राज करेंगे” (5:18,21देखें)।

का अहसास बढ़ा तो परमात्मा की कृपा और भी ज़्यादा बढ़ गई।
21इसलिए जैसे पाप के शासन काल में सबकी मृत्यु होगी, वैसे ही कृपा
के शासन काल में सबको मोक्ष मिलेगा। कृपा के शासन काल में, लोग
मुक्तिदाता प्रभु येशु के द्वारा धर्मी बनाए जाएँगे।

6

पाप की गुलामी से मुक्त होना

1तो इसका मतलब क्या यह है कि हम पाप करते रहें कि हम पर
परमात्मा की कृपा बरसती रहे? 2बिल्कुल भी नहीं। जहाँ तक पाप
का सम्बन्ध है हम उसके लिए मर चुके हैं, तो अब हम पाप कैसे करते
रहें? 3क्या तुम नहीं जानते कि जब हमने समर्पण-स्नान लिया था तो
हम मुक्तिदाता येशु के साथ जुड़ गए थे और उस समय हम उनकी मृत्यु
के साथ भी हम जुड़ गए थे? 4समर्पण-स्नान लेते समय जब हम पानी
के अंदर गए तो मानो हम मर गए और मुक्तिदाता के साथ शव-गुफा में
रखे गए। और जब हम पानी से बाहर आए, तो ऐसा लगा जैसे हम एक
नया जीवन जीने के लिए शव-गुफा से निकल आए हैं, जैसे मुक्तिदाता
अपने पिता परमात्मा के तेज में एक नया जीवन जीने के लिए शव-गुफा
से बाहर आए थे।

5यदि प्रभु येशु के समान मरने से हमारा उनकी मृत्यु से एकात्म
हुआ, तो प्रभु येशु के ज़िन्दा हो जाने में भी हमारा उनके जीवन से
एकात्म ज़रूर होगा। 6हम जानते हैं कि हमारे पुराने पापी स्वभाव की
मुक्तिदाता येशु के साथ क्रूस पर मृत्यु हो चुकी है जिससे हमारा शरीर
जो पाप की तरफ जल्दी आकर्षित होता है, अब से हम पर शासन न
करे और हम पाप के गुलाम न बने रहें। 7क्योंकि यदि हम मर चुके हैं,
अर्थात् हमारा पापी स्वभाव मर चूका है, तो अब हम पाप की ज़ंजीरों
से मुक्त हो गए हैं। 8अब यदि हम मुक्तिदाता येशु के साथ मर चुके हैं
तो हमें विश्वास है कि हम उनके साथ जीवित भी रहेंगे, 9क्योंकि हम
जानते हैं कि मुक्तिदाता मरने के बाद ज़िन्दा हो कर फिर कभी नहीं
मरेंगे और उन पर फिर मृत्यु की शक्ति का प्रभाव नहीं होगा। 10वह
पाप की शक्ति का नाश करने के लिए सब लोगों के लिए एक बार
मरे, परंतु वह अब जीवित हैं और केवल परमात्मा के लिए जीवित

हैं। [11]इसी प्रकार तुम भी अपने आपको पाप की शक्ति के लिए मरा
हुआ समझो और यह भी समझो कि अब तुम मुक्तिदाता येशु के द्वारा
परमात्मा के लिए जीते हो।
[12]इसलिए पाप को अपने शरीर पर काबू न करने दो। तुम्हारे इस शरीर
को एक दिन तो मरना ही है, इसलिए शरीर की लालसाओं की आवाज़
को मत सुनो। [13]अपने शरीर के अलग-अलग अंगों को पाप और अधर्म
करने के लिए अब इस्तेमाल न होने दो, परंतु अपने आप को परमात्मा
को समर्पित करो। तुम मरे हुए लोगों के समान थे जिन्हें परमात्मा ने अब
नया जीवन दिया है। अब तुम अपने शरीर के अलग-अलग अंगों को
धर्मी जीवन बिताने के लिए में इस्तेमाल करो। [14]पाप को अपने जीवन
पर शासन न करने दो। तुम पर परमात्मा की कृपा का शासन है, अब
तुम मोशे के नियम और शिक्षा के अधीन नहीं हो।
[15]तो क्या हम यह समझें कि हम पाप करने के लिए इसलिए आज़ाद
हैं क्योंकि हम पर मोशे के नियम और शिक्षा नहीं परंतु परमात्मा की
कृपा शासन करती है? कभी नहीं! [16]क्या तुमको एहसास नहीं है कि
तुम जिस किसी की भी आज्ञा का पालन करना चुनते हैं, तुम उसके
गुलाम बन जाते हैं? तुम पाप के गुलाम हो सकते हैं, जो तुम्हें अनन्त
मृत्यु की ओर ले जाता है, या तुम परमात्मा की आज्ञा का पालन करना
चुन सकते हैं, जो तुम्हें हमेशा के लिए उनका धर्मी भक्त बना सकता
है! [17]तुम पाप के गुलाम हुआ करते थे। परंतु मैं परमात्मा का धन्यवाद
करता हूँ कि तुमने अपने पूरे मन से उस उदाहरण का पालन किया जो
तुम्हें मिली शिक्षा में दिया गया है। [18]और अब तुम पाप से मुक्त किए
जाने पर धर्मी लक्ष्यों को प्राप्त करने के सेवक बन गए हो।
[19]मैं इन साधारण उदाहरणों का इस्तेमाल कर रहा हूँ, ताकि तुम्हें
समझने में मदद मिल सके। तुमने बीते समय में अपने शरीर के
अलग-अलग अंगों को अपने बुरे विचारों का गुलाम बनने दिया जिससे
तुममें पाप की जड़ और गहरी हो गई। परंतु अब अपने शरीर के सब
अंगों को परमात्मा के धर्मी सेवक बनाओ कि तुम पूरी तरह पवित्र हो
जाओ।
[20]जब तुम पाप के गुलाम थे, तुमने परमात्मा के धर्मी भक्त बनने पर
कोई ध्यान नहीं दिया। [21]तब इसका तुम्हें क्या फल मिला? वे बातें

जिनसे अब तुम लज्जित होते हो, उनका अंत मृत्यु है। [22]परंतु अब
तुम पाप से मुक्त होकर परमात्मा के सेवक बन गए हो, जिसका फल
है पवित्रता और जिसका परिणाम है मोक्ष। [23]जब हम पाप करते हैं, तो
उसका परिणाम मृत्यु होता है, परंतु परमात्मा हमें मोक्ष का उपहार देते
हैं जो हमें मुक्तिदाता प्रभु येशु से मिलता है।

7

मुक्तिदाता के साथ नए रिश्ते की शुरुआत

[1]प्रिय भक्त भाइयो और बहनो, तुम निश्चित रूप से नियमों के बारे
में यह जानते हो कि नियम केवल जीवित लोगों पर ही लागू होते हैं।
[2]उदाहरण के लिए, कानून कहता है जब तक शादीशुदा औरत का
पति ज़िन्दा है वह दोनों पति-पत्नी के रिश्ते में बंधे हुए हैं, परंतु यदि
उसका पति मर जाए तो पत्नी शादी के कानून से आज़ाद हो जाती है।
[3]इसलिए यदि पति के ज़िन्दा रहते हुए पत्नी किसी दूसरे पुरुष के साथ
रहे तो यह अवैध सम्बन्ध होता है। परंतु यदि पति मर जाए तो वह उस
शादी के कानून से आज़ाद हो जाती है और किसी दूसरे पुरुष के साथ
रहने पर उसका सम्बन्ध अवैध नहीं मना जाएगा।

[4]मेरे भक्त भाइयो और बहनो, तुम्हारे साथ ऐसा ही है। तुम मुक्तिदाता के
शरीर की बलि द्वारा* मोशे के नियम और शिक्षा के साथ अपने पुराने रिश्ते
के लिए मर चुके हो ताकि तुम्हारा मुक्तिदाता के साथ एक नया रिश्ता
जुड़ सके जिन्हें परमात्मा ने मरे हुओ में से ज़िन्दा कर दिया था कि हम
परमात्मा के लिए फलदायी हो सकें। [5]जब हम सांसारिक थे, पापी इच्छाएँ
हमारे भीतर काम कर रही थीं और मोशे के नियम और शिक्षा ने हमें
इसके लिए फटकारा। हमने फटकार से सबक नहीं लिया, परंतु पाप की
गहराइयों में और नीचे चले गए, जिससे हम में ऐसे फल पैदा हुए की मृत्यु
का आना निश्चित हो गया। [6]परंतु अब हमारी मोशे के नियम और शिक्षा के
प्रति, मानो मृत्यु हो गयी है, और उसके बंधनों से मुक्त हो गए हैं। इसलिए
हम परमात्मा की पवित्र आत्मा का पालन करके नए तरीके से सेवा कर
सकते हैं, न कि पुराने तरीके से अर्थात् लिखित नियमों का पालन करके।

---

* **7:4** *मुक्तिदाता के शरीर की बलि द्वारा* - या “मुक्तिदाता के शरीर का हिस्सा होने के माध्यम से”

मोशे के नियम और शिक्षा की अच्छाई और कमीं

[7]तो हम क्या कहें? क्या मोशे के नियम और शिक्षा बुरे हैं? ऐसा
हो नहीं सकता। मोशे के नियम और शिक्षा के बिना मैं पाप को नहीं
पहचान सकता था। यदि मोशे के नियम और शिक्षा में नहीं लिखा
होता "लालच मत कर" तो मैं लालच को नहीं पहचानता। [8]परंतु मोशे
के नियम और शिक्षा ने मेरे पापों को आइना दिखाया जिससे अनेक
तरह के पाप मुझमें भड़क गए और उन्होंने हर प्रकार की बुरी इच्छाएँ
मुझमें पैदा कर दीं। इस तरह मोशे के नियम और शिक्षा के आइने के
बिना पाप को देख नहीं सकते*। [9]मोशे के नियम और शिक्षा के बारे
में जब मुझे पता नहीं था तो मुझे लगता था कि मैं अच्छा जीवन जी
रहा था। लेकिन जब मैंने उसके बारे में सीखा तो पाया कि मेरा जीवन
पापों से भरा पड़ा है और मेरा सम्बन्ध परमात्मा के साथ टूट चूका
था।* [10]और पाप इतना चालाक था कि उसने मोशे के नियम और
शिक्षा का इस्तेमाल करके मुझे परमात्मा की आज्ञा न मानने के लिए
मजबूर किया और फिर मुझे आत्मिक रूप से मार डाला। [11]पाप ने मोशे
के नियम और शिक्षा का फायदा उठाया और ने मेरे पापों को आइना
दिखाया जिससे अनेक तरह के पाप मुझमें भड़क गए और नियम का
पालन न करने से मेरा सम्बन्ध परमात्मा से टूट गया। [12]फिर भी मोशे के
नियम और शिक्षा और उसके आदेश पवित्र, सही और अच्छे हैं।

[13]तो क्या जो अच्छा था उसी ने मुझे मार डाला? बिल्कुल नहीं।
इसके विपरीत पाप मेरे लिए मृत्यु का कारण था। मोशे के नियम और
शिक्षा जो मेरे लिए अच्छे थे, पाप ने उसी का इस्तेमाल कर मेरी मृत्यु
को पैदा कर दिया जिससे मेरे पाप की सही पहचान सामने आ जाए।
और नियम के माध्यम से मेरे पाप का रंग और भी गहरा हो जाए।

[14]हम जानते हैं कि मोशे के नियम और शिक्षा आत्मिक हैं, पर मैं
सांसारिक हूँ और पाप की गुलामी में पूरी तरह बिका हुआ। [15]मेरी
समझ में नहीं आता कि मैं क्या कर बैठता हूँ। मैं जो चाहता हूँ वह नहीं
करता, परंतु जिस बात से मुझे नफ़रत है, मैं वही मुझ से हो जाता है।

---

* **7:8** *पाप को देख नहीं सकते* - या, "पाप मृत है" * **7:9** *मेरा सम्बन्ध परमात्मा के साथ टूट चूका था* - या, "मेरी मृत्यु हो गई" या, "आत्मिक रूप से मेरी मृत्यु हो गई"

[16]मैं जानता हूँ कि मोशे के नियम और शिक्षा अच्छे हैं पर मैं अच्छा
नहीं हूँ। मैं वही काम कर बैठता हूँ जिसे मैं नहीं करना चाहता।
[17]पर अब, पाप करने वाला मैं नहीं, परंतु वह पाप है जो मुझमें
बसा हुआ है। [18]क्योंकि मैं जानता हूँ कि मुझमें, अर्थात् मेरे सांसारिक
स्वभाव में, भलाई नहीं है। अच्छे काम करने की इच्छा तो मुझमें है पर
मैं उनको कर नहीं पाता। [19]जिस अच्छे काम को मैं करना चाहता हूँ उसे
नहीं करता, पर जिस बुरे काम को करना नहीं चाहता उसी को कर
बैठता हूँ। [20]अब यदि मैं वह काम करता हूँ जिसे मैं करना नहीं चाहता
तो करने वाला मैं न रहा परंतु पाप है, जो मुझमें बसा हुआ है।
[21]मुझे इस सच का अहसास होता है कि जब मैं किसी अच्छे काम
को करना चाहता हूँ तो बुराई को अपने साथ ही पाता हूँ। [22]मेरा
अंतर्मन तो परमात्मा के नियम और शिक्षा को खुशी से स्वीकार करता
है, [23]लेकिन मेरे अंदर एक और शक्ति है जिससे मेरे शरीर के अंग मेरे
मन की अच्छी बातों के खिलाफ लड़ते हैं, और मुझे पाप में फँसाते हैं
और मेरे शरीर को पाप गुलाम बनाते है। [24]मैं कैसा अभागा मनुष्य हूँ!
इस शरीर से मुझे कौन मुक्ति देगा जो मुझे मौत की ओर ले जा रहा है?
[25]केवल परमात्मा! वह हमारे मुक्तिदाता प्रभु येशु के द्वारा मुझे मुक्ति
देंगे। परमात्मा का धन्यवाद! अपने मन से तो मैं स्वयं परमात्मा के
नियम और शिक्षा का पालन करना चाहता हूँ, परंतु अपने सांसारिक
शरीर से पाप के मार्ग का पालन कर बैठता हूँ।

8

पवित्र आत्मा ने हमें पाप और मौत की शक्ति से मुक्त कर दिया

[1]अगर तुम मुक्तिदाता येशु की शरण में आ गए हो तो तुम्हें तुम्हारे बुरे
कर्मों का दंड नहीं मिलेगा। [2]पवित्र आत्मा की मोक्ष देने वाली शक्ति
ने मुक्तिदाता येशु द्वारा तुमको पाप और मौत के बंधन से मुक्त कर
दिया है। [3]मोशे के नियम और शिक्षा ऐसा नहीं कर सके क्योंकि इसमें
हमारे सांसारिक स्वभाव में बदलाव लाने की शक्ति नहीं थी। लेकिन
परमात्मा ने वह किया जो नियम नहीं कर सका। उन्होंने अपने पुत्र
को एक ऐसे शरीर में भेजा जो हमारे पापी शरीर जैसा था। और उस
शरीर में परमात्मा ने हमारे पापों के लिए अपने पुत्र को बलि के रूप में

देकर हमारे ऊपर पाप के शासन के अंत की घोषणा कर दी। [4]उन्होंने
ऐसा इसलिए किया ताकि मोशे के नियम और शिक्षा की अपेक्षा पूरी
हो सके। अब हम सांसारिक इच्छाओं के पीछे नहीं भागते बल्कि
परमात्मा की पवित्र आत्मा की इच्छाओं को पूरा करते हैं।

मोक्ष और शांति कैसे पाएँ?

[5]जो सांसारिक स्वभाव के हैं, उनका ध्यान संसार की बातों पर
ही रहता है, परंतु जिनका स्वभाव आत्मिक है, उनका ध्यान पवित्र
आत्मा पर रहता है। [6]केवल सांसारिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में मन
लगाना मृत्यु के बंधन में बंधे रहना है,* परंतु पवित्र आत्मा में मन
लगाना मोक्ष और शांति है। [7]सांसारिक में लीन रहना परमात्मा से
दुश्मनी लेना है क्योंकि सांसारिक स्वभाव परमात्मा की आज्ञाओं
का पालन नहीं करता और न ही कर सकता है। [8]इसलिए जो लोग
सांसारिकता में जी रहे हैं, वे परमात्मा को खुश नहीं कर सकते।

[9]परंतु तुम सांसारिक स्वभाव के अनुसार नहीं, परंतु पवित्र आत्मा के
अनुसार जी रहे हो, क्योंकि परमात्मा की पवित्र आत्मा तुममें निवास
करती है। जिनमें मुक्तिदाता येशु की आत्मा नहीं, उनका मुक्तिदाता
के साथ कोई सम्बन्ध नहीं। [10]परंतु मुक्तिदाता येशु तुम्हारे भीतर रहते
हैं। तो पाप के कारण तुम्हारे शरीर की मृत्यु तो होगी परंतु आत्मा को
मोक्ष मिलेगा क्योंकि परमात्मा ने तुम्हारे बुरे कर्मों के खाते को मिटा
कर अपना धर्मी भक्त बना दिया। [11]और यदि उन परमात्मा की पवित्र
आत्मा जिन्होंने मुक्तिदाता प्रभु येशु को मरने के बाद ज़िन्दा कर दिया,
तुम्हारे भीतर रहती है, तो परमात्मा अच्छे और बुरे कर्मों के न्याय के
दिन तुम्हारे नश्वर शरीर को जीवित कर देंगे।

परमात्मा के बेटे-बेटियाँ बनना

[12]इसलिए भक्त भाइयो और बहनो, हमें सांसारिक स्वभाव के
अनुसार जीने की ज़रूरत नहीं है। [13]यदि तुम सांसारिकता में जीते हो

---

* **8:6** *मृत्यु के बंधन में बंधे रहना है* - या, “मृत्यु।” लेकिन यहाँ अर्थ एक ऐसी अनंत मृत्यु है जिससे बचने का कोई रास्ता नहीं है।

तो मरने के लिए तैयार रहो, परंतु यदि पवित्र आत्मा की सहायता से
सांसारिक बुरे कामों* को मारते हो तो तुम मोक्ष प्राप्त करोगे। 14क्योंकि
जो लोग परमात्मा की पवित्र आत्मा द्वारा चलते हैं, वे परमात्मा के
बेटे-बेटियाँ* हैं।
15परमात्मा हमें डर का गुलाम नहीं बनाते कि हम डर में जीवन
बिताएँ। इसके बजाय, हम उनके बेटे-बेटियाँ बन गए हैं* और उन्हें
“पिताजी, हे पिता!”* कह कर पुकारते हैं। 16स्वयं पवित्र आत्मा हमारी
आत्मा के साथ मिलकर साबित करता है कि हम परमात्मा की संतान
हैं, 17और यदि संतान हैं तो वारिस भी, परमात्मा के वारिस और
मुक्तिदाता येशु के साथ संयुक्त वारिस। क्योंकि हम ने मुक्तिदाता के
साथ दुख उठाया है, हम उनके तेज में सहभागी भी होंगे।
18मैं जानता हूँ कि जो तेज हम पर* प्रकट होगा, उस तेज के सामने इस
दुनिया के दुख कुछ नहीं हैं। 19सारी सृष्टि उस समय का इंतज़ार कर रही
है जब परमात्मा अपने बेटे-बेटियों को प्रकट करेंगे। 20सृष्टि को अपने
उद्देश्य को पूरा करने से पीछे कर दिया गया, लेकिन यह उसकी अपनी
पसंद का नतीजा नहीं था। परमात्मा ने सृष्टि की शुरुआत में अपनी इच्छा
से यह इसलिए किया 21कि स्वयं सृष्टि सड़न और बदबू के बंधन से मुक्त
हो और परमात्मा की संतान के तेज से भरी मुक्ति में भाग ले। 22हम
जानते हैं कि सारी सृष्टि अब तक प्रसव पीड़ा के दर्द के समान परमात्मा
से सुंदर भविष्य के लिए दर्द से तड़प रही है। 23हम, जिनके पास पवित्र
आत्मा है, अपने मन की गहराइयों में कराह रहे हैं, जबकि हम परमात्मा
से इस पुष्टि की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि हम उनकी संतान हैं और वह
हमारे शरीर का रूपांतरण कर दें। 24जब हमें मुक्ति मिली, तो हमारे पास
भविष्य में इसके मिलने की आशा थी। लेकिन अगर हमारे पास पहले
से ही वह है जिसकी हम आशा करते हैं, तो आशा करते रहने की कोई
आवश्यकता नहीं है। 25परंतु यदि हम उस चीज़ की आशा करते हैं जो
दिखाई नहीं देती, तो सबर के साथ उसका इंतज़ार ज़रूर करना चाहिए।

---

* **8:13** *सांसारिक बुरे कामों* या, “बुरे शरीरिक कामों” * **8:14** *बेटे-बेटियाँ* - या, “बेटे”
* **8:15** *हम उनके बेटे-बेटियाँ बन गए हैं* - या, गोद ले लिया है * **8:15** *पिताजी, हे पिता!* - या, “हे पिताजी, हे अब्बा!” अब्बा अरामी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ “पिता” है। * **8:18** *हम पर* - या, “हम में”

परमात्मा-भक्तों की भलाई हर परिस्थिति में करते हैं

[26]इसी प्रकार पवित्र आत्मा भी हमारी भक्ति की कमियों को पूरा करने
में सहायता करता है। उदाहरण के लिए, जब हम नहीं जानते कि कैसे और
क्या प्रार्थना करनी है, तो पवित्र आत्मा हमारे लिए ऐसे तरीके से प्रार्थना
करता है जिसे शब्दों में कहा नहीं जा सकता। [27]किंतु अंतर्यामी परमात्मा
जानते हैं कि पवित्र आत्मा क्या कह रहा है, क्योंकि पवित्र आत्मा
परमात्मा की इच्छा के अनुसार हम पवित्र भक्तों के लिए प्रार्थना करता
है। [28]हम जानते हैं कि जो परमात्मा से प्रेम करते हैं और जिन्हें परमात्मा ने
अपनी योजनाओं को पूरा करने के लिए चुना है, चाहें स्थिति कोई भी हो
परमात्मा उनके लिए हर बात से भलाई पैदा कर देते हैं। [29]और परमात्मा
पहले से जानते हैं कि उनके चुने हुए लोग कौन होंगे। उन्होंने उन्हें अपने
पुत्र प्रभु येशु की तरह बनाने का फैसला किया था, इसलिए उनके पुत्र प्रभु
येशु बहुत से भाइयों-बहनों में पहले जन्मे बच्चे होंगे। [30]जिन्हें परमात्मा पहले
से जानते थे, उन्हें अपने परिवार में शामिल होने का निमंत्रण दिया, और
जिन्हें निमंत्रण दिया परमात्मा ने उन्हें धर्मी भक्त बना दिया और जिन्हें
परमात्मा ने धर्मी भक्त बनाया, उन्हें तेज भी दिया।

परमात्मा का प्रेम

[31]तो इस बारे में क्या कहा जा सकता है? यदि परमात्मा हमारे पक्ष में
हैं, तो हमारा विरोध कौन कर सकता है? [32]परमात्मा ने अपने पुत्र को दर्द
के सागर में जाने से नहीं रोका, परंतु हम सबके लिए उनको क्रूस पर बलि
होने के लिए दे दिया। जब परमात्मा ने ऐसा करने के लिए तैयार हैं, तो
क्या वह हमें सब कुछ नहीं देंगे जिसकी हमें ज़रूरत है? [33]अगर परमात्मा
अपने चुने हुए लोगों को धर्मी भक्त बनाते हैं तो क्या किसी में इतनी
हिम्मत है कि उन पर आरोप लगा सके। [34]या क्या कोई उन पर दोष
लगा सकता है? कोई नहीं! मुक्तिदाता येशु मरे और परमात्मा ने उन्हें
ज़िन्दा कर दिया। अब वह परमात्मा की दाईं ओर बैठकर उनसे हमारी
सिफारिश करते हैं। [35]क्या कुछ भी हमें मुक्तिदाता येशु के प्रेम से अलग
कर सकता है? क्या दुख, या परेशानियाँ, या अत्याचार, या अकाल, या
गरीबी, या खतरा, या मौत की धमकी हमें उनसे अलग कर सकती है?
[36]जैसे परमात्मा-ग्रंथ में लिखा है, “तुम्हारे लिए दिनभर हमें हमारी जान

का खतरा रहता है, हमारे साथ वध होने वाली भेड़ों के समान व्यवहार
किया जाता है।” [37]परंतु मुक्तिदाता ने हम से प्रेम किया है और उनके द्वारा
हम इन सब दुखों में पूरी तरह से विजय प्राप्त करते हैं। [38-39]मुझे पूरा भरोसा
है कि न तो मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न अशुद्ध आत्मा, न आसमानी
में रह रहा अत्याचारी, न वर्तमान, न भविष्य, न शक्तियाँ, न ऊँचाई, न
गहराई, और न इस सृष्टि की कोई और चीज़, हमें परमात्मा के उस प्रेम से
अलग कर सकेगी जो हमारे मुक्तिदाता प्रभु येशु द्वारा मिला है।

9

पौलुस का अपने लोगों के प्रति अद्‌भुत प्रेम

[1]मुक्तिदाता जानते हैं कि मैं हमेशा सच बोलता हूँ। मेरे मन की आवाज़
और पवित्र आत्मा इसकी पुष्टि करते हैं [2]कि मेरा मन दुख से भरा है और
मैं हमेशा एक भारी बोझ में रहता हूँ। [3-4]मैं परमात्मा के शाप को अपने
ऊपर लेने के लिए तैयार हूँ और मैं मुक्तिदाता से अलग होने के लिए भी
तैयार हूँ अगर इससे मेरे इज़राएल के लोगों का कुछ भला हो सकता है।
इन्हें परमात्मा ने अपने बेटे-बेटियाँ बनाया है और अपने तेज का दर्शन
दिया है। परमात्मा ने उनके साथ अनुबंध किए हैं और अपने नियम और
शिक्षा उनको दिए हैं। परमात्मा ने उन्हें अपनी भक्ति करना सिखाया
और उनके भविष्य के लिए बहुत से सुंदर वादे किए। [5]ये लोग कुलपिता
अब्राहम, इसहाक और याकोब के वंश से हैं, जो मुक्तिदाता येशु के भी
पूर्वज थे। मैं प्रार्थना करता हूँ कि मुक्तिदाता का जो सब के मालिक हैं,*
हमेशा तक गुणगान होता रहे। सत्य परमात्मा की जय!

परमात्मा का अद्‌भुत चुनाव

[6]यह नहीं कहा जा सकता कि परमात्मा ने अपना वादा तोड़ दिया।
सच्चाई तो यह है कि इज़राएल के सभी लोग परमात्मा के सच्चे भक्त
नहीं हैं। [7-9]वास्तव में, जब परमात्मा ने अब्राहम से वादा किया था, तो
उनका अर्थ केवल अब्राहम के पुत्र इसहाक के वंशज से था। परमात्मा

8:36 भजन शास्त्र 44:22   * **9:5** *मुक्तिदाता का जो सब के मालिक हैं* - या “मुक्तिदाता, जो सब पर शासन करते हैं।”

ने जब अब्राहम की पत्नी सारा से वादा किया था तो यह वादा इसहाक
के बारे में था। परमात्मा ने उससे कहा, "जब मैं अगले साल तुमसे
मिलने वापस आऊँगा, तब तुम्हारे एक बेटा हो चुका होगा।"
[10]यह मत भूलो कि इसहाक और रिबैका के बच्चों के साथ क्या हुआ।
[11-12]अभी बच्चे पैदा भी नहीं हुए थे और न उन्होंने कुछ अच्छा या बुरा
ही किया था, तो भी रिबका से परमात्मा ने कहा कि बड़ा बेटा एसाव
छोटे बेटे याकोब की सेवा करेगा। परमात्मा ने ऐसा यह दिखाने के
लिए कहा कि वह अपनी पसंद खुद चुनते हैं और इसका उनके कर्मों से
कुछ लेना देना नहीं था। [13]जैसा परमात्मा-ग्रंथ में लिखा है, "याकोब से
परमात्मा ने प्रेम किया, किंतु एसाव को स्वीकार नहीं किया।"
[14]तो क्या हम यह कह रहे हैं कि परमात्मा का व्यवहार गलत है?
कभी नहीं! [15]क्योंकि परमात्मा ने उनके प्रवक्ता मोशे से कहा,

"मैं जिस पर कृपा करना चाहूँगा उस पर कृपा करूँगा
और जिस पर दया करना चाहूँगा उस पर दया।"

[16]इसलिए यह लोगों की इच्छा या कोशिश पर नहीं, बल्कि परमात्मा
की कृपा पर निर्भर करता है। [17]जैसा परमात्मा ने अपने ग्रंथ में इजिप्ट
देश के राजा फेरो से कहा, "तुम्हें राजा बनाने में मेरा लक्ष्य यह है कि
तुम्हारे द्वारा मैं अपनी शक्ति दिखाऊँ जिससे सारे संसार में मेरा नाम
घोषित किया जाए।" [18]सब कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि
परमात्मा क्या करने का फैसला लेते हैं। वह लोगों पर दया दिखाने का
फैसला ले सकते हैं या उन्हें ढीठ बनाने का।
[19]कोई सवाल कर सकता है, "परमात्मा हम पर दोष कैसे लगा सकते
हैं, यदि वह हमसे वैसा ही व्यवहार करवाते हैं जैसा वह चाहते हैं?" [20]अरे
मनुष्य, तुम हो कौन जो परमात्मा से बहस करो? क्या कोई वस्तु अपने
बनाने वाले से पूछ सकती है, कि तुमने मुझे ऐसा क्यों बनाया? [21]क्या
कुम्हार को यह अधिकार नहीं है कि वह एक ही मिट्टी के ढेले से एक
सुंदर चमकदार कटोरा और एक सादा कटोरा बना सके? [22]परमात्मा
अपना क्रोध दिखा सकते थे और हर उस व्यक्ति के* खिलाफ अपनी

9:7-9 उत्पत्ति 21:12 **9:7-9** उत्पत्ति 18:10,14 **9:11-12** उत्पत्ति 25:23 **9:15** निर्गमन 33:19 **9:17** निर्गमन 9:16 * **9:22** *हर उस व्यक्ति* - या, "क्रोध की वस्तु" अर्थात् "वे लोग जिनसे परमात्मा क्रोधित थे"

शक्ति प्रकट कर सकते थे जो नष्ट होने के योग्य थे। लेकिन इसके बजाय,
उन्होंने उनके व्यव्हार के प्रति सबर रखा। [23]उन्होंने ऐसा यह दिखाने के
लिए किया कि वह कितने तेजस्वी हैं जब उन्होंने उन लोगों पर दया* की
जिन्हें उन्होंने अपने तेज में शामिल करने के लिए चुना है।

[24]चाहे हम यहूदी समाज के हों या दूसरे समाज के हम ही वे चुने
हुए लोग हैं। [25]जैसे परमात्मा अपने प्रवक्ता होशे की पुस्तक में कहते
हैं,

हालाँकि वे मेरे लोग नहीं हैं,
फिर भी मैं उन्हें अपना बनाऊँगा।
मैं उनके समाज के लोगों से प्रेम करूँगा
जिन्हें कभी प्रेम नहीं किया गया।

और,

[26] "एक बार कुछ लोगों से कहा गया था,
'तुम मेरे लोग नहीं हो।'
परंतु कुछ समय बाद
वे जीवित परमात्मा के बेटे-बेटियाँ कहलाएँ।"

[27]परमात्मा के प्रवक्ता यशायाह ने इज़राएल के बारे में कहा,

"इज़राएल के बेटे-बेटियों की संख्या
समुद्र के रेत के कणों के समान असंख्य ही क्यों न हो,
तो भी उनमें से मुट्ठीभर लोगों को ही मुक्ति मिलेगी।
[28] प्रभु परमात्मा जल्दी ही पृथ्वी के सब लोगों के
अच्छे और बुरे कर्मों का न्याय करेंगे।
उनका किया गया न्याय कभी नहीं बदलेगा।"

[29]परमात्मा के प्रवक्ता यशायाह यह भी कह चुके हैं,

"यदि सर्वशक्तिमान परमात्मा* ने
हमारे कुछ लोगों को बचाया नहीं होता,
तो हम सदोम शहर के समान नष्ट हो गए होते

---

* **9:23** *उन लोगों पर दया* - या, "दया की वस्तु" लेकिन इसका अर्थ है, "लोग जिनपर परमात्मा दया करते हैं" **9:25** होशे 2:23 **9:26** यहोशु 1:10 **9:28** यशायाह 10:22-23

* **9:29** *सर्वशक्तिमान परमात्मा* - या, "सेनाओ का प्रभु" जिसका अर्थ "वह सर्वशक्तिमान प्रभु हैं जो सभी स्वर्गदूतों को आदेश देते हैं।"

और हमारी तुलना बर्बाद गमोरा शहर से की जाती।”

इज़राएल की विफलता का कारण

[30]फिर इसका परिणाम क्या हुआ? कई अन्य समाजों के लोग, जो अपने
बुरे कर्मों का खाता मिटाने की कोशिश भी नहीं कर रहे थे और न ही
परमात्मा के धर्मी भक्त बनने का कोई प्रयास कर रहे थे, उन्होंने केवल
परमात्मा में आस्था के द्वारा इस आशीर्वाद को प्राप्त कर लिया। [31]लेकिन
इज़राएल के लोग जिन्होंने मोशे के नियम और शिक्षा का पालन करके* ये
आशीर्वाद पाने की कोशिश की, वे इसे नहीं पा सके। [32]क्योंकि इज़राएल
के लोगों को लगा कि परमात्मा पर आस्था रखने के बजाय सिर्फ़ अच्छे
कर्म करना ज़रुरी है। और साथ ही, इज़राएल के लोग परमात्मा द्वारा भेजे
गए मुक्तिदाता को अपनी आधार शिला के रूप में स्वीकार नहीं करना
चाहते थे।* [33]जैसा कि परमात्मा-ग्रंथ में चेतावनी दी,

मैंने यरूशलम* में इज़राएल को
आत्मिक आधार शिला* का पत्थर दिया था,
परंतु उन्होंने उसे ठुकराकर फेंक दिया।
अगर वे पत्थर को अपने जीवन की नींव के तौर पर
स्वीकार करते तो वे निराश नहीं होते।

10

प्रभु येशु पर आस्था रखने से मुक्ति प्राप्त होगी

[1]भक्त भाइयो और बहनो, मैं यह दिल से चाहता हूँ और परमात्मा
से मेरी प्रार्थना है कि इज़राएल के लोगों को मुक्ति प्राप्त हो। [2]मुझे पता
है कि उनमें परमात्मा के प्रति जोश तो है, लेकिन उनका यह जोश सच
पर आधारित नहीं है [3]वे नहीं जानते कि परमात्मा किस प्रकार हमारे

9:29 यशायाह 1:9 * **9:31** *मोशे के नियम और शिक्षा का पालन करके* - या, “धर्मी जीवन का नियम” * **9:32** *इज़राएल के लोग परमात्मा द्वारा भेजे गए मुक्तिदाता को अपनी आधार शिला के रूप में स्वीकार नहीं करना चाहते थे* - या, “इज़राएल के लोग उस आधार शिला पर गिरे, जिससे लोग ठोकर खाते हैं।” लेकिन इस संदर्भ में, प्रभु येशु वह आधार शिला हैं जिसे परमात्मा ने भेजा है जिसे लोगों ने स्वीकार नहीं किया। * **9:33** *यरूशलम* - या, “सियोन,” लेकिन इसका अर्थ “यरूशलम” है * **9:33** *आत्मिक आधार शिला* - इसका संदर्भ मुक्तिदाता येशु आत्मिक आधार शिला हैं **9:33** यशायाह 28:16; 8:14

बुरे कर्मों के खाते को मिटा देते हैं और परमात्मा में हमारी आस्था के
द्वारा अपना धर्मी भक्त बना देते हैं। इज़राएल के लोगों ने इस बात पर
विश्वास नहीं किया। बल्कि, वे केवल वही करने में विश्वास करते थे
जो उन्हें मोशे के नियम और शिक्षा के अनुसार सही लगता था।
4परंतु अब मुक्तिदाता येशु मोशे के नियम और शिक्षा से भी ऊँची
बात बताते है, जिसके द्वारा हर वह व्यक्ति जो मुक्तिदाता येशु में
आस्था रखता है, उसके बुरे कर्मों का खाता मिटा दिया जाता है और
वह परमात्मा का धर्मी भक्त बन जाता है।
5मोशे ने लिखा कि धर्मी होने के लिए सभी नियम और शिक्षा का
पालन करना कितना ज़रूरी है, "यदि आप इन बातों का पालन करेंगे
तो तुमको जीवन मिलेगा।" 6परंतु वे लोग जिनके बुरे कर्मों का खाता
परमात्मा ने मिटा दिया है और जो मुक्तिदाता येशु पर आस्था प्रकट
करके धर्मी बने हैं, वे कभी नहीं कहेंगे, "आओ हम परमस्वर्ग में जाएँ
और मुक्तिदाता येशु से कहें कि संदेश देने के लिए नीचे चलो।" 7और
वे यह भी नहीं पूछेंगे, "कौन गहरे गड्ढे में जाकर मुक्तिदाता येशु को
जीवित करेगा ताकि हम उनके प्रवचन फिर से सुन सकें?" 8वे सभी
धर्मी भक्त केवल यही कहेंगे, "उनके संदेश को पाने के लिए दूर जाने
की कोई ज़रूरत नहीं। वह पहले से ही तुम्हारे मन में और होठों पर
है," अर्थात् यह उसी आस्था का संदेश है जिसके बारे में हम प्रचार
करते हैं। 9यदि तुम सच्चे मन से कहते हो कि मुक्तिदाता येशु ही प्रभु हैं,
और तुम अपने मन से विश्वास करते हो कि परमात्मा ने उन्हें मरने के
बाद ज़िन्दा कर दिया, तो तुम्हें मुक्ति मिल जाएगी। 10क्योंकि जब तुम
इस पर विश्वास करते हो और इसे दूसरों को बताते हो, तब परमात्मा
तुम्हारे बुरे कर्मों का खाता मिटाकर तुम्हें अपना धर्मी भक्त बना
देंगे, अर्थात् तुम्हें मुक्ति का वरदान देंगे। 11परमात्मा-ग्रंथ में लिखा है,
"जो कोई उस पर आस्था रखेगा, उसे लोगों और परमात्मा के सामने
निराश नहीं होना पड़ेगा," 12चाहे वह व्यक्ति यहूदी समाज का हो या
किसी दूसरे समाज का, सबके केवल एक ही प्रभु हैं, और जो कोई
भी उन्हें मदद के लिए पुकारता है, वह उसे भरपूर आशीर्वाद देते हैं।

10:5 लेवी 18:5 **10:11** यशायाह 28:16

[13]क्योंकि "जो कोई प्रभु के नाम को मुक्ति के लिए पुकारेगा, मुक्ति
प्राप्त करेगा!"

यहूदियों के लिए सुनहरा अवसर

[14]परंतु लोग कैसे प्रभु येशु में आस्था रख सकते हैं और उन्हें मुक्ति
देने के लिए पुकार सकते हैं यदि उन्होंने उनके बारे में कभी सुना ही
नहीं? और वे शुभ संदेश कैसे सुन सकते हैं, जब तक कि कोई उन्हें
बताएगा नहीं? [15]और लोग दूसरों को बताएँगे कैसे जब तक कोई उन्हें
भेजेगा नहीं? इसलिए परमात्मा-ग्रंथ में लिखा है कि

शुभ संदेश सुनाने वाले के चरण कमल घर में पड़ना
कितनी सुंदर बात है!

[16]फिर भी सभी ने शुभ संदेश पर विश्वास नहीं किया है। जैसा कि
परमात्मा के प्रवक्ता यशायाह ने पूछा, "हे प्रभु परमात्मा, क्या किसी ने
हमारी बातों पर विश्वास किया है?"
[17]मुक्तिदाता के संदेश को सुने बिना किसी में आस्था पैदा नहीं हो
सकती। [18]परंतु क्या मैं यह कह रहा हूँ कि इज़राएल के लोगों ने नहीं
सुना? नहीं, उन्होंने सुना है। परमात्मा-ग्रंथ का कहना है कि

"संदेश पृथ्वी पर हर जगह बताया गया था।
पूरी दुनिया में इसकी घोषणा की गई थी।"

[19]इज़राएल के लोगों को समझ में आया या नहीं? हाँ, उन्हें समझ में
आया था, यहाँ तक कि मोशे के समय में भी प्रभु परमात्मा ने कहा था,

"मैं इज़राएल को उन लोगों के प्रति ईर्ष्या से भर दूँगा
जिनकी गिनती कहीं नहीं होती।
मैं उन्हें ऐसे लोगों द्वारा गुस्सा दिलाऊँगा
जिनको किसी बात की समझ नहीं।"

[20]प्रवक्ता यशायाह ने निडर होकर बोला कि परमात्मा ने कहा,*

"मुझे उन लोगों ने पाया जो मुझे ढूंढ़ भी नहीं रहे थे।
उन्हें मैंने दर्शन दिया जो मेरे बारे में पूछ भी नहीं रहे थे।"

10:13 योएल 2:32 **10:15** यशायाह 52:7 **10:16** यशायाह 53:1 **10:18** भजन शास्त्र 19:4 **10:19** उपदेश 32:21 * **10:20** *यशायाह ने निडर होकर बोला कि परमात्मा ने कहा* - या, "यशायाह ने निडर होकर कहा" **10:20** यशायाह 65:1

[21]किंतु इज़राएल के लोगों के बारे में प्रभु परमात्मा का कहना है,
"दिन भर मैं, परमात्मा, उन लोगों के बदलने के इंतज़ार में रहा
जो हठीले हैं और कहना नहीं मानते हैं।"

11

परमात्मा अपनी कृपा से भक्तों को चुनते हैं उनके कर्मों से नहीं

[1]मेरा प्रश्न है, "क्या परमात्मा ने अपने इज़राएल के लोगों को छोड़ दिया है?" बिल्कुल भी नहीं। मैं स्वयं इज़राएल से हूँ, कुलपिता अब्राहम के वंश का और बिन्यामिन के वंश का।

[2]परमात्मा ने अपने लोगों को, जिन्हें उन्होंने बहुत पहले चुन लिया था, छोड़ा नहीं। क्या तुम नहीं जानते हो कि परमात्मा-ग्रंथ में परमात्मा के प्रवक्ता एलियाह के बारे में क्या लिखा है? एलियाह ने इज़राएल
के लोगों के विरुद्ध परमात्मा से यह विनती की, [3]"हे प्रभु, इज़राएल के
लोगों ने आपके प्रवक्ताओं की हत्या कर डाली और आपकी वेदियों को नष्ट कर दिया। अकेला मैं ही बचा हूँ और वे मेरा जीवन भी लेना चाहते हैं।"

[4]परंतु परमात्मा ने एलियाह से कहा, "मेरे अभी भी 7,000 भक्त हैं जिन्होंने बाल देवता की भक्ति करना स्वीकार नहीं किया।"

[5]ठीक इसी प्रकार आज भी इज़राएल के लोगों में कुछ भक्त बाकी
है जिनको परमात्मा ने अपनी कृपा से चुना है। [6]परंतु यदि परमात्मा
की कृपा से यह हुआ है तो इसका आधार कर्म नहीं। अगर यह कर्मों से होता तो कृपा नहीं होती।

[7]तो यह स्थिति है कि इज़राएल के अधिकांश लोगों पर परमात्मा की कृपा नहीं हुई जिसको वे प्राप्त करना चाहते थे। केवल परमात्मा के चुने हुए लोगों को ही यह कृपा प्राप्त हो पाई। दूसरे लोगों के मन कठोर बन
गए [8]जैसा कि परमात्मा-ग्रंथ का कहना है,
"परमात्मा ने उनके मन और इंद्रियों को सुन्न कर दिया,
उन्हें ऐसी आँखें दीं जिससे दिखाई न दे,
उन्हें ऐसे कान दिए, जिससे सुनाई न दे,

10:21 यशायाह 65:2 **11:3** 1 राजाओं 19:10,14 **11:4** 1 राजाओं 19:18

और आज तक उनकी दशा ऐसी ही बनी हुई है।”
[9]राजा दाविद भी कहता है,
“उनकी परिस्थितियाँ बुरी हो जाएँ और वे संभल न सकें।
उन्हें अपनी करनी का फल मिले।
[10]उनकी आँखों के आगे अँधेरा छा जाए
कि वे देख न सकें
और उनकी पीठ एक ऐसे बोझ से झुका दो
जो फिर कभी सीधी न हो।”

मुक्ति की प्राप्ति कोई भी कर सकता है

[11]क्या मेरा मतलब यह है कि इज़राएल के लोगों को ठोकर इसलिए
लगी कि फिर कभी उठ न पाएँ? बिल्कुल नहीं! उनकी अधर्म ने
दुनिया के दूसरे समाज के लोगों को मुक्ति मिलना संभव किया, और
इससे इज़राएल के लोगों में जलन होगी। [12]परंतु यदि बाकी संसार के
लोगों को इज़राएल के पाप और नुकसान से इतनी अधिक मदद मिली,
तो इज़राएल के लोगों का वापस परमात्मा की शरण में जाने से दूसरे
समाज के लोगों को कितनी मदद मिलेगी!

[13]मैं खासतौर से उन लोगों से कहना चाहता हूँ जो इज़राएल देश के नहीं
हैं कि मैं तुम्हारे लिए राजदूत हूँ और इस सेवा पर मुझे गर्व है। [14]क्योंकि मैं
अपने इज़राएल के लोगों को ईर्ष्या से भरा हुआ देखना चाहता हूँ, जब वे
यह देखें कि तुम जो इज़राएल देश से नहीं हो, फिर भी मुक्ति का आनंद ले
रहे हो। उनकी ईर्ष्या उन्हें मुक्ति प्राप्त करने में मदद कर सकती है। [15]जब
इज़राएल के लोगों ने परमात्मा को ठुकरा दिया, तो दुनिया के बाकी देशों
के लोग परमात्मा से मेल-मिलाप करने लगे। तो जब परमात्मा इज़राएल के
लोगों से मेल-मिलाप करेंगे, तो यह मरे हुए रिश्ते* को फिर से जीवन देना
जैसा होगा! [16]यदि परमात्मा को अर्पण का पहला पेड़ा* पवित्र है तो पूरा
गूँधा हुआ आटा भी पवित्र है। यदि जड़ पवित्र है तो पूरा पेड़ भी पवित्र है।

11:8 यशायाह 29:10; उपदेश 29:4 **11:10** भजन शास्त्र 69:22-23 * **11:15** *मरे हुए रिश्ते* - या, “मरे हुओं में से जीवित हो जाना” * **11:16** *पहला पेड़ा पवित्र है* - यहाँ पहला पेड़ा कुलपिता अब्राहम, इसहाक और याकोब के संदर्भ में कहा गया है। अगर वे पवित्र हैं तो उनके वंशज भी पवित्र समझे जाएँगे।

अहंकार के विरुद्ध चेतावनी

[17]तुम लोग जो इज़राएल देश से नहीं हो, जंगली जैतून की डालियों
के समान हो, जिनको अच्छे किस्म के जैतून के पेड़ के साथ जोड़कर
कलम कर दिया गया है, अर्थात इज़राएल के लोगों के साथ जोड़ दिया
गया है। तुमने उन शाखाओं का स्थान ले लिया है जो उस से कटी हुई
थीं। और इस वजह से तुम उस अच्छे किस्म के पेड़ का हिस्सा बनने से
मिलने वाली आशीषों का आनंद लेते हो। [18]लेकिन यह मत सोचो कि
तुम कटी हुई शाखाओं से बेहतर हो। बस इतना याद रखना कि तुम
उस पेड़ की जड़ों और तने को सहारा नहीं दे रहे हो। इसकी जड़ें और
तना, अर्थात इज़राएल के लोग, तुमको सहारा दे रहे हैं! [19]तुम कहोगे,
"शाखाएँ काटी गईं कि उसके स्थान पर हम कलम बनकर जुड़ सकें।"
[20]यह ठीक है, पर जो शाखाएँ काटी गईं उसका कारण मुक्तिदाता पर
आस्था न रखना था, परंतु तुम जहाँ हो वहाँ आस्था रखने के कारण
हो। तो घमंड मत करो, लेकिन सावधान रहो। [21]अगर परमात्मा ने उन
असली शाखाओं को काट दिया, तो क्या वह तुम्हारे साथ ऐसा नहीं
कर सकते? [22]अब तुम दोनों तरफ देखो कि परमात्मा कितने दयालु
और कितने सख्त हो सकते हैं। उन्होंने आज्ञा न मानने वालों से सख्त
व्यवहार किया, लेकिन वह तुम पर दया दिखाते रहेंगे यदि तुम उनकी
दया पर भरोसा रखते हो। नहीं तो परमात्मा तुम्हें भी अपने से अलग
कर देंगे।*

[23]यदि वे अन्य शाखाएँ फिर से आस्था रखना शुरू कर देंगी, तो
वे फिर से उस पेड़ का हिस्सा बन जाएँगी। परमात्मा के पास उन्हें
वापस लगाने की शक्ति है। [24]आखिरकार, एक जंगली जैतून के पेड़
से शाखाओं को काटा जाना और अच्छी किस्म वाले जैतून के पेड़ की
कलम बनना स्वाभाविक नहीं था। इसलिए इस बात की बहुत अधिक
संभावना है कि परमात्मा असली शाखाओं को वापस अच्छी किस्म
के जैतून के पेड़ में शामिल कर देंगे। [25]मेरे भक्त भाइयो और बहनो,
मैं, इज़राएल के लोगों के साथ जो हुआ है, उसका रहस्य बताऊँगा
ताकि तुम जो यहूदी नहीं हो अपने पर घमंड न कर सको। इज़राएल के

---

* **11:22** *अलग कर देंगे* - या, "शाखा की तरह काट देंगे"

कुछ लोग तो ढीठ हो गए हैं, और वे तब तक ऐसे ही रहेंगे, जब तक
कि तुम में से बहुत से जो इज़राएल देश से नहीं है, मुक्तिदाता येशु की
शरण में न आ जाओ। [26]तब सारे इज़राएल को मुक्ति मिलेगी, जैसा कि
परमात्मा-ग्रंथ में लिखा है,

"यरूशलम से मुक्तिदाता का आना होगा
और वह इज़राएल के लोगों* से अधर्म दूर करेगा।
[27]उन से मेरा अनुबंध यह है
कि मैं उनके पापों का हिसाब मिटा दूँगा।"

[28]इज़राएल के बहुत से लोग शुभ संदेश के शत्रु हैं, और अब इससे
दूसरे देश के लोगों को लाभ होता है। तौ भी इज़राएल के लोगों से
परमात्मा प्रेम करते है, क्योंकि परमात्मा ने उन्हें और उनके पूर्वज
कुलपिता अब्राहम, इसहाक और याकूब को चुना है। [29]परमात्मा
अपने द्वारा दिए गए आशीर्वादों को वापस नहीं लेते या अपने चुने हुए
लोगों को नहीं भूलते। [30]तुम लोग जो इज़राएल समाज के नहीं हो पहले
परमात्मा की बातों पर नहीं चलते थे, परंतु अब इज़राएल समाज के
लोगों का परमात्मा की बातों पर न चलने के कारण तुमने दया प्राप्त
की है। [31]अब, जब तुमने जो इज़राएल समाज से नहीं हो, दया प्राप्त
कर ली है, इज़राएल समाज के वे लोग भी जिन्होंने परमात्मा की बातों
पर चलना छोड़ दिया था, तुम पर हुई दया देखकर अब दया प्राप्त
कर सकते हैं। [32]परमात्मा ने सबको उनके आज्ञा न मानने के कारण
अहसास करा दिया है कि वे दोष की कैद में हैं ताकि वह भी उन
पर दया करें। [33]परमात्मा की असीमित बुद्धि और ज्ञान को कौन माप
सकता है? कौन उनके फैसलों को समझ सकता है या समझा सकता है
कि वह क्या करते हैं?

[34]"क्योंकि प्रभु परमात्मा के मन को कौन जान सकता है?
उन्हें सलाह देने योग्य ज्ञान किसके पास है?"
[35]"क्या किसी ने परमात्मा को कुछ उधार दिया है
जो परमात्मा चुका न सकें?"

---

* **11:26** *इज़राएल के लोगों* - या, "याकोब के वंश" **11:27** यशायाह 59:20,21;
यरमियाह 31:33,34 **11:34** यशायाह 40:13 **11:35** जोब 41:11

36सब कुछ परमात्मा से आता है, सब कुछ उन्हीं के द्वारा बना है
और उन्हीं के पास सब कुछ लौट जाएगा। उनका गुणगान हमेशा तक
हो! सत्य परमात्मा की जय!

12

1भक्त भाइयो और बहनो, परमात्मा ने तुम पर दया की है। इसलिए
मैं तुमसे विनती कर रहा हूँ कि जब तक तुम ज़िन्दा हो, तब तक अपने
शरीरों को परमात्मा की सेवा के लिए अर्पित कर दो। तुम्हारे जीवन
पवित्र उपहारों के समान हैं ऐसे उपहार परमात्मा को पसंद हैं। जब तुम
अपने शरीरों को परमात्मा की सेवा के लिए इस्तेमाल करते हो, तो
उनकी भक्ति का यही सही तरीका है।* 2आज के सांसारिक लोगों की
तरह मत बनो, लेकिन परमात्मा को तुम्हारे सोचने का तरीका बदलने
दो। तब तुम समझ जाओगे और परमात्मा, जो चाहते हैं, उसे करने के
लिए तैयार हो जाओगे, अर्थात् वह सब कुछ जो अच्छा है, परमात्मा
को पसंद है, और जो सही है।

परमात्मा के वरदानों का सही उपयोग

3मैं उस कृपा के कारण जो मुझ पर हुई है, तुम सबसे कहता हूँ कि
तुम में से कोई भी व्यक्ति अपने आपको ज़रूरत से ज़्यादा अच्छा
न समझे। अच्छी समझ का इस्तेमाल करें और अपने आप अपनी
आस्था की गहराई को नापें जो परमात्मा ने तुमको दी है। 4क्योंकि
जिस प्रकार एक शरीर में अनेक अंग हैं, और इन सब अंगों का कार्य
एक-सा नहीं है, 5उसी प्रकार हमारे साथ भी है। हम अनेक होते हुए
भी, मुक्तिदाता येशु ने हमें एक शरीर के समान जोड़ा हैं, और इस
प्रकार सारे भक्त मिल-जुलकर काम करते हैं। 6हमारे वरदान भी, हमें
दी गई कृपा के अनुसार अलग-अलग हैं। जिसे परमात्मा का दिव्य
संदेश सुनाने का वरदान प्राप्त है, उसे पूरी आस्था के साथ ऐसा करना
चाहिए। 7जिसे दूसरों की सेवा करने का वरदान मिला है, उसे सेवा
करनी चाहिए। जिसको शिक्षा देने का वरदान मिला है, वह शिक्षा दे।

---

* **12:1** *उनकी भक्ति का यही सही तरीका है* - या, “परमात्मा के सेवा समझदार तरीके से करना।”

[8]और जिसको दूसरों को प्रेरणा देने का वरदान मिला हैं, वह प्रेरणा
देता रहे। जिसको दान का वरदान मिला है, वह मन खोलकर दे। और
जिसे दूसरों का मार्गदर्शन करने का वरदान मिला है, वह ईमानदारी
से मार्गदर्शन करे। और जिसे ज़रुरतमंद लोगों की सहायता करने का
वरदान मिला है वह खुशी से ऐसा करता रहे।

सत्संगियों के लिए शिक्षा

[9]तुम्हारा प्रेम दिखावटी न हो। हर उस चीज़ से नफरत करो जो बुरी
है और जो अच्छी है उसे कस कर पकड़ लो। [10]एक-दूसरे से सच्चा प्रेम
करो। अपने से ज़्यादा दूसरों का आदर करो। [11]काम करने में आलसी
मत बनो, आत्मिक जोश से भरकर प्रभु की सेवा करो। [12]परमात्मा ने
जो वादे किए हैं उनमें आनंदित रहो।* परेशानी में सबर रखो। प्रार्थना
करते रहो। [13]जरूरतमंद पवित्र भक्तों का ख्याल रखो और अजनबियों
का अपने घर में स्वागत करो।

[14]परमात्मा से उन सभी को आशीर्वाद देने के लिए कहो जो तुम्हारे
साथ बुरा व्यवहार करते हैं। हाँ, परमात्मा से उन्हें आशीर्वाद देने के
लिए कहो, शाप देने के लिए नहीं। [15]जो खुश हैं उनके साथ खुशी
मनाओ और जो दुख से रोते हैं उनके साथ रो। [16]मेल-मिलाप से रहो।
अहंकारी मत बनो किंतु गरीब लोगों के साथ दोस्त की तरह व्यवहार
करो। अपने आपको बहुत बुद्धिमान मत समझो। [17]बुराई के बदले
बुराई मत करो। तुम्हारा व्यवहार सबके साथ अच्छा होना चाहिए।
[18]अपनी तरफ से जहाँ तक हो सके, सबके साथ शांति से रहो। [19]प्यारे
दोस्तो, बदला मत लो। परमात्मा को तुम्हारी तरफ से बदला लेने दो।
प्रभु परमात्मा ने अपने ग्रंथ में कहा है कि

> “मैं बदला लेने वाला हूँ
> और मैं उनको सज़ा दूँगा।”

[20] “यदि तुम्हारा दुश्मन भूखा है तो उसे खाना खिलाओ
> और यदि प्यासा है तो उसे पानी पिलाओ।

---

* **12:12** *परमात्मा ने जो वादे किए हैं उनमें आनंदित रहो* - या, “आशा में आनंदित रहो।”
12:19 उपदेश 32:35

इससे उसे दर्द और शर्मिंदगी का अहसास होगा।”*
[21]बुराई से हार न मानो, किंतु भलाई से बुराई पर विजय प्राप्त करो।

13

शासक परमात्मा के अधीन हैं

[1]उन शासकों की आज्ञा मानो जिनका तुम पर अधिकार है। केवल
परमात्मा ही किसी व्यक्ति को अधिकार दे सकते हैं, और वह इन
शासकों को उनके पदों पर नियुक्त करते हैं। [2]जो लोग शासन का
विरोध करते हैं, वे परमात्मा ने जो किया है उसका भी विरोध करते
हैं, और उन लोगों को दंडित किया जाएगा। [3]अधिकारियों से डरने की
जरूरत नहीं है। बस, सही काम करो तो तुम्हारी तारीफ़ होगी। [4]क्योंकि
वे परमात्मा के सेवक हैं, और तुम्हारी मदद करना उनका कर्तव्य
है। यदि तुम कुछ गलत करते हो, तो तुमको डरना चाहिए, क्योंकि
इन शासकों को तुमको दंडित करने का अधिकार है। वे परमात्मा के
सेवक हैं जो अपराधियों को यह दिखाने के लिए दंडित करते हैं कि
परमात्मा इन बुरे कामों से कितने क्रोधित हैं। [5]लेकिन तुमको शासकों
की आज्ञा का पालन ईमानदारी से करना चाहिए क्योंकि तुम्हारे मन
की आवाज़ यही कहती है। इसे केवल दंड से बचने के लिए न करो।
[6]तुमको अपने टैक्स का भुगतान भी करना चाहिए। अधिकारी
परमात्मा के सेवक हैं, और इन मामलों की देखभाल करना उनका
कर्तव्य है। [7]जिस भी व्यक्ति से तुमने उधार लिया है उसे वापस करो,
और जो टैक्स सरकार का बनता है, उसे दो। जिनका तुमको आदर
करना चाहिए उनका आदर करो, और उनका सम्मान करो जिनका
तुमको सम्मान करना चाहिए।

भक्ति का सार प्रेम है

[8]अपना सारा कर्ज़ चुका दो! लेकिन तुम एक-दूसरे के लिए प्यार
का कर्ज़ नहीं चूका सकते। जो दूसरों से प्यार करता है, उसने मोशे के

---

* **12:20** *इससे उसे दर्द और शर्मिंदगी का अहसास होगा* - या, “तुम उसके सिर पर अंगारों का ढेर लगाओगे।” **12:20** ज्ञान की बातें 25:21-22

नियम और शिक्षा के मुताबिक सब कुछ किया है। [9]मोशे के नियम
और शिक्षा में कई आज्ञाएँ हैं, जैसे, "शादी के बाहर शारीरक सम्बन्ध
मत रखो। हत्या मत करो। चोरी मत करो। दूसरों की चीज़ों का लालच
मत करो।" लेकिन इन सभी का सार उस आदेश में दिया गया है जो
कहता है, "दूसरों से उतना ही प्यार करो जितना तुम खुद से करते हो।"
[10]जो दूसरों से प्यार करते हैं, वह उन्हें नुकसान नहीं पहुँचाते। इसलिए
प्रेम ही वह सब कुछ है जो परमात्मा के नियम और शिक्षा को पूरा
करता है।

[11]और दूसरों को प्रेम करने के साथ-साथ इस बात को भी जानो कि
हम किस काल में रह रहे हैं। अब तुम्हारे जागने का समय आ पहुँचा
है। तुम जानते हो कि मुक्ति का दिन, उस समय से अधिक निकट
है जिस समय हमने पहली बार प्रभु येशु पर आस्था प्रकट की थी।
[12]बुराई की काली रात लगभग खत्म हो चुकी है। मुक्तिदाता की
वापसी का दिन लगभग आ गया है। तो आओ, हम उन अन्धकार के
बुरे कामों से छुटकारा पाएँ। आओ, हम प्रकाश के वे अच्छे काम करें
जो हमारी रक्षा करते हैं। [13]इसलिए ठीक से व्यवहार करो, जैसा लोग
दिन की रोशनी में करते हैं। रात को होने वाली नशे से भरी पार्टियों में
न जाओ, अनैतिक यौन सम्बन्ध न रखो, लड़ाई-झगड़ा और ईर्ष्या न
करो। [14]इसके बजाय अपने मुक्तिदाता प्रभु येशु के नक्शे-कदम पर
चलो, सांसारिक जीवन की बुरी इच्छाओं पर नहीं।

14

हम सबको अपना-अपना हिसाब परमात्मा को देना है

[1]सब भक्त भाइयों और बहनों के साथ मेल-मिलाप से रहो, उनके साथ
भी जिनकी आस्था अभी इतनी मज़बूत नहीं है। उनकी आलोचना सिर्फ
इसलिए मत करो कि कुछ मामलों में उनके विचार तुमसे अलग हैं।
[2]उदाहरण के लिए, कुछ भक्तों के विचार है कि किसी भी प्रकार का खाना
खाने में कोई बुराई नहीं है, पर कुछ भक्त जिनकी आस्था कच्ची है, उनके
विचार हैं कि केवल शाकाहारी खाना ही खाना चाहिए। [3]लेकिन तुमको

13:9 लेवी 19:18,34

शाकाहारी खाने या मांसाहारी खाने के आधार पर दूसरों की बुराई नहीं
करनी चाहिए। सच बात तो यह है कि परमात्मा दोनों से प्रेम करते हैं। [4]तुम्हें
किसी और के सेवकों की बुराई करने का क्या अधिकार है? केवल उनका
मालिक तय कर सकता है कि उनके सेवक उनकी आज्ञा का पालन करते
हैं या नहीं। सेवकों के बारे में मालिक को ही निर्णय लेने का अधिकार है।
[5]इसी तरह, कुछ लोग एक दिन को दूसरे दिन से ज़्यादा शुभ मानते हैं,
जबकि कुछ लोग हर दिन को एक जैसा मानते हैं। तुम सभी को पूरा यकीन
होना चाहिए कि तुम जो भी दिन चुन रहे हो वह तुम्हारे लिए सही है। [6]जो
लोग किसी खास दिन प्रभु की भक्ति करते हैं, वे ऐसा उनके सम्मान के
लिए करते हैं और जो लोग किसी भी तरह का भोजन खाते हैं, वे प्रभु का
सम्मान करने के लिए करते हैं, क्योंकि वे खाने से पहले परमात्मा का
धन्यवाद करते हैं। और जो लोग कुछ खास भोजन खाने से इनकार करते
हैं, वे भी प्रभु को प्रसन्न करना चाहते हैं और परमात्मा का धन्यवाद करना
चाहते हैं। [7]यदि हम अपने जीवन से प्रभु येशु की सेवा करते हैं, तो हम
उनकी सेवा कर रहे हैं, न कि स्वयं की। यदि हम अपनी मृत्यु से प्रभु की
सेवा करते हैं, तो हम उनकी सेवा कर रहे हैं, न कि स्वयं की। [8]हम जिएँ या
मरें, हम हमेशा अपने प्रभु की सेवा करते हैं, और हम उनके ही हैं। [9]इस
कारण मुक्तिदाता मरे और फिर परमात्मा ने उन्हें मरे हुओं में से ज़िन्दा कर
दिया कि जो ज़िन्दा हैं और जो मर चुके हैं वह दोनों के प्रभु हो सकें। [10]तो
तुम अपने भक्त साथियों की बुराई क्यों करते हो? उनको तुम छोटा क्यों
समझते हो? हम सबको परमात्मा के सिंहासन के सामने खड़ा होना है।*
[11]क्योंकि ग्रंथ में प्रभु परमात्मा कहते हैं, “मैं जीवित परमात्मा हूँ, हर एक
व्यक्ति मेरी भक्ति करेगा और सब लोग मेरे नाम का गुणगान करेंगे।” [12]तो
हममें से हर एक व्यक्ति अपना-अपना हिसाब परमात्मा को देगा।

दूसरों के रास्ते में काँटे मत बिछाओ

[13]इसलिए अब से हम एक-दूसरे की बुराई करना छोड़ दें, और पक्का
कर लें कि अपने भक्त साथियों के रास्ते में काँटे न बिछाएँ।

---

* **14:10** *सिंहासन के सामने खड़ा होना है* - इसको 1 कुरिंथियों 3:13-15; 2 कुरिंथियों 5:10देखें।
14:11 यशायाह 49:18; 45:23

[14]प्रभु येशु ने मुझे यह स्पष्ट कर दिया है कि अलग-अलग प्रकार
के खाने में कोई बुराई नहीं है। लेकिन अगर तुमको लगता है कि
कुछ चीजें नहीं खानी चाहिए* तो तुम्हें उन चीजों से दूर रहना चाहिए।
[15]तुम जो भोजन खाते हो यदि उसके कारण किसी को परेशानी होती
है तो तुम्हारा व्यवहार प्रेम से भरा नहीं है। किसी को उनकी इच्छा
के विरुद्ध ऐसा खाना खाने को मजबूर न करो जिसको वे समझते हैं
कि परमात्मा ने उन्हें मना किया है और जिससे वे पाप कर बैठें।
मुक्तिदाता ने उन लोगों के लिए अपने प्राण दिए, इसलिए उन्हें पाप
करने के लिए न उकसाओ। [16]अलग-अलग तरह का खाना खाने के
अपने अधिकार से मुक्तिदाता के सम्मान को चोट मत पहुँचाओ।
[17]परमात्मा का साम्राज्य इस बात का विषय नहीं है कि हम कुछ
खाने-पीने के नियमों का पालन करते हैं या नहीं। यह साम्राज्य
परमात्मा के साथ धर्मी जीवन जीने के बारे में है, एक दूसरे के साथ
शांति से रहने और सच्ची खुशी के बारे में है। यह सब परमात्मा की
पवित्र आत्मा द्वारा प्राप्त होता है। [18]जो व्यक्ति इन बातों को ध्यान में
रखकर मुक्तिदाता की सेवा करता है, वह परमात्मा को खुश करता
है और दूसरे लोग भी उसका आदर करते हैं। [19]हमें एक दूसरे के साथ
मेल-मिलाप से रहने की कोशिश करनी चाहिए और हम एक-दूसरे को
मज़बूत करें तथा मदद करें।

[20]परमात्मा ने जो अच्छे काम लोगों के जीवन में किए हैं उसे तुम्हारी
अलग-अलग तरह का खाना खाने की आदतें नष्ट न कर दें। सभी
प्रकार के खाने ठीक हैं, लेकिन तुम जो खाते हो उससे दूसरों की
आस्था को चोट पहुँचाना गलत है। [21]सही यह है कि न तो माँस खाया
जाए और न ही अंगूर रस* पीया जाए या ऐसा कुछ भी किया जाए
जिससे अन्य भक्त भाइयों और बहनों की आस्था को चोट पहुँचे।
[22]इन बातों के बारे में तुम्हारी सोच तुम्हारे और परमात्मा के बीच
में गुप्त रहनी चाहिए। तुमको वही करना चाहिए जो तुमने इस बारे में
सही समझा है। तुम जो खाते हो उसके लिए दोषी महसूस न करो, तब

* **14:14** *कुछ चीजें नहीं खानी चाहिए* - या, “कुछ चीजें अशुद्ध है।” * **14:21** *अंगूर रस* या, “वाइन”

परमात्मा आपको आशीर्वाद देंगे। [23]लेकिन अगर जो तुम खा रहे हो
उस पर तुम्हें शक है कि वह तुम्हारे विचारों के मुताबिक सही भोजन
नहीं है परंतु फिर भी तुम खा लेते हो, तो तुम अपने विचारों के खिलाफ
जा रहे हो। और तुम जानते हो कि ऐसा करना गलत है। क्योंकि जो
कुछ भी तुम अपने विचारों के विरुद्ध करते हो वह पाप है।

15

अलग विचार रखने वालों से भी ताल-मेल बना कर रखो

[1]हम जो आस्था में मजबूत हैं, हमें उन भक्त भाइयों और बहनों की
भावनाओं का ध्यान रखना चाहिए जिनकी आस्था अभी इतनी मज़बूत
नहीं है। हमें सिर्फ अपने बारे में ही नहीं सोचना चाहिए। [2]हम में से हर
एक को अपने भाइयों और बहनों के लिए वही करना चाहिए जो उनके
लिए भला हो और जिससे उनकी आस्था मज़बूत बनी रहे। [3]क्योंकि
मुक्तिदाता ने सिर्फ अपने बारे में ही नहीं सोचा, जैसा कि परमात्मा-ग्रंथ
में लिखा है,

“जिन लोगों ने तुम्हारा अपमान किया,
उन्होंने मेरा भी अपमान किया।”

[4]ऐसी बातें हमें सिखाने के लिए बहुत समय पहले परमात्मा-ग्रंथ में
लिखी गई थीं। जब हम सबर से परमात्मा के वायदों को पूरा होते हुए
देखने का इंतज़ार करते हैं तो परमात्मा-ग्रंथ हमें आशा और हौसला देते
हैं। [5]परमात्मा जो सबर और हौसला देने वाले हैं, वह तुमको दूसरों के
प्रति वही समझ प्रदान करें जो मुक्तिदाता येशु में थी। [6]ताकि तुम एक
आवाज़ में हमारे मुक्तिदाता प्रभु येशु के पिता परमात्मा का गुणगान
करते रहो।

सबके लिए शुभ संदेश

[7]इसलिए जैसे मुक्तिदाता ने तुम्हें अपनाया वैसे ही एक-दूसरे को
अपनाओ, तब परमात्मा का गुणगान होगा। [8]मैं तुमको बताता हूँ कि
मुक्तिदाता येशु यहूदियों के सेवक के रूप में यह दिखाने के लिए

15:3 भजन शास्त्र 69:9

आए थे कि परमात्मा ने कुलपिता अब्राहम, इसहाक और याकोब
से किए गए वादों को पूरा किया है [9]ताकि जो लोग यहूदी नहीं हैं, वे
भी परमात्मा की दया के लिए उनके नाम का गुणगान करें। जैसा कि
परमात्मा-ग्रंथ में लिखा है कि

इस कारण मैं दुनिया के हर समाज के लोगों के बीच
आपका गुणगान करूँगा और आपके नाम से गीत गाऊँगा।

[10]दूसरी जगह परमात्मा-ग्रंथ में यह लिखा है कि

तुम जो यहूदी समाज से नहीं हो
यहूदी समाज के लोगों के साथ मिलकर खुशी मनाओ।

[11]और यह भी लिखा है कि

दुनिया के हर समाज के लोगों
प्रभु परमात्मा के जयकारे लगाओ
और हर एक समुदाय के लोग उनका गुणगान करे।

[12]परमात्मा-ग्रंथ में एक और जगह परमात्मा के प्रवक्ता यशायाह का
कहना है कि

राजा दाविद के वंश* में से कोई सत्ता में आएगा।
वह हर समाज पर शासन करेगा,
और हर समाज के लोग उन पर अपनी मुक्ति की आशा रखेंगे।

[13]मैं प्रार्थना करता हूँ कि यह मुक्ति की आशा देने वाले परमात्मा
तुम्हारी आस्था के कारण तुमको पूरा सुख और शांति प्रदान करें। और
पवित्र आत्मा की शक्ति तुम्हें आशा से भर दे।

पौलुस की परमात्मा के कामों के प्रति लगन

[14]मेरे भक्त भाइयो और बहनो, मुझे यकीन है कि तुम सब बहुत
अच्छे हो और तुम्हारे पास एक-दूसरे को सिखाने के लिए हर तरह का
ज्ञान है। [15]फिर भी मैंने तुमको साफ-साफ शब्दों में लिखा है और तुम्हें
कुछ बातें याद दिलाने की कोशिश की है। परमात्मा ने मुझ पर बड़ी
कृपा की है [16]कि मैं दुनिया के हर समाज के लोगों के लिए मुक्तिदाता

15:9 भजन शास्त्र 69:9 **15:10** उपदेश 32:43 **15:11** भजन शास्त्र 117:1 * **15:12** *राजा दाविद के वंश* - या, “जेसी की जड़।” जेसी राजा दाविद के पिता थे। **15:12** यशायाह 11:10

येशु का सेवक बनूँ। परमात्मा ने मुझे हर समाज के लोगों के बीच
उनके शुभ संदेश की सेवा में पुरोहित के कार्य के लिए चुना है, ताकि
वे लोग एक ऐसी भेंट के समान हों जो परमात्मा को पसंद आए और
वे पवित्र आत्मा से पवित्र हो जाएँ। [17]मुक्तिदाता येशु की शक्ति द्वारा
जो काम मैंने परमात्मा के लिए किए हैं उन पर मुझे गर्व है। [18]वास्तव
में, मैं केवल इस बारे में बात करूँगा कि कैसे मुक्तिदाता येशु ने मेरे
वचनों और कामों के द्वारा अपना काम किया, ताकि दुनिया के हर
समाज के लोग उनकी आज्ञा का पालन करें। [19]और मैं बताऊँगा कि
कैसे मुक्तिदाता ने पवित्र आत्मा की शक्ति से चमत्कार और अद्भुत
काम किए। मैंने यरूशलम से लेकर ईलीरिकम प्रदेश* तक उनके बारे
में शुभ संदेश का प्रचार किया है।

[20]मेरी इच्छा हमेशा वहाँ शुभ संदेश का प्रचार करने की रही है जहाँ
मुक्तिदाता येशु का नाम कभी किसी ने नहीं सुना हो और न किसी
ने सत्संगों की स्थापना की हो, बजाय इसके कि जहाँ सत्संग पहले से
ही किसी और द्वारा स्थापित किया गया हो। [21]जैसा परमात्मा-ग्रंथ में
लिखा है, “जिनको उनके बारे में कभी नहीं बताया गया, वे उन्हें देखेंगे
और जिन्होंने उनके बारे में कभी नहीं सुना, वे समझेंगे।”

[22]अपने काम के कारण मुझे अनेक बार तुम्हारे यहाँ आने से रुकना
पड़ा। [23]अभी जिस जगह मैं हूँ वहाँ मैंने अपना सारा काम खत्म कर
लिया है, और मैं सालों से तुम्हारे पास आना चाहता हूँ। [24]मैं स्पेन
देश जाने की योजना बना रहा हूँ। उस समय रोम में रूक कर तुमसे
मुलाकात कर लूँगा। मैं तुम्हारे साथ कुछ समय बिताने का आनंद लेना
चाहता हूँ और फिर मुझे आशा है कि तुम स्पेन पहुँचने में मेरी मदद
करेंगे।

[25]अभी तो मैं पवित्र भक्तों की सहायता के लिए यरूशलम जा रहा हूँ,
[26]क्योंकि मैसेडोनिया और आखेया के सत्संगियों ने खुशी से यरूशलम
के गरीब पवित्र भक्तों के लिए कुछ आर्थिक सहायता भेजी है। [27]ऐसा
करते हुए वे बहुत खुश हैं, और सच तो यह है कि वे यरूशलम के

---

* **15:19** *ईलीरिकम प्रदेश* - वर्तमान अलबानिया देश तथा क्रोएशिया देश के मध्य स्थित रोम साम्राज्य के अधीन एक प्राचीन प्रदेश। **15:21** यशायाह 52:15

पवित्र भक्तों के कर्ज़दार भी हैं। क्योंकि यदि दूसरे समाज के लोगों को
उन पवित्र भक्तों से मिले आत्मिक आशीर्वाद में साझेदारी हुई है तो
यह ठीक ही है कि वे आर्थिक रीति से उनकी सहायता करें। 28यह दान
यरूशलम के पवित्र भक्तों को सौंपने के बाद मैं तुम्हारे पास से होता
हुआ स्पेन देश जाऊँगा। 29और मुझे यकीन है कि जब मैं आऊँगा, तो
मुक्तिदाता येशु हमारे समय को भरपूर आशीर्वाद देंगे। 30भक्त भाइयो
और बहनो, मुक्तिदाता प्रभु येशु की शक्ति और पवित्र आत्मा से मिलने
वाले प्रेम के द्वारा, मैं तुमसे मेरे साथ और मेरे लिए पूरे मन से परमात्मा
से प्रार्थना करने के लिए विनती करता हूँ, 31जिससे यहूदिया प्रदेश
के यहूदी लोग जो प्रभु येशु को नहीं मानते हैं मुझे नुकसान न पहुँचा
सकें और मेरा दान पाकर यरूशलम के पवित्र भक्त खुश हों। 32प्रार्थना
करना कि परमात्मा की इच्छा से तुम्हारे यहाँ खुशी के साथ पहुँचकर
तुम्हारी संगति में तरोताज़ा हो जाऊँ।
33शांति देने वाले परमात्मा तुम सबके साथ हों। तथास्तु।

16

पौलुस का सत्संगियों के प्रति प्रेम भरा आभार

1केनखराई शहर के सत्संग की सेविका, हमारी बहन फीबे की मैं
तुमसे सिफारिश करता हूँ। 2प्रभु येशु के नाम में उसका स्वागत करना,
क्योंकि वह पवित्र भक्तों के बीच सम्मान के योग्य है। उसे जो कुछ भी
चाहिए, उसमें उसकी मदद करना, क्योंकि वह बहुतों की और विशेष
रूप से मेरे लिए मददगार रही है।
3मुक्तिदाता येशु की सेवा में मेरे साथ काम करने वाली बहन प्रिस्का
और भाई अकुलस को नमस्कार, 4जिन्होंने मेरी जान बचाने के लिए
अपनी जान खतरे में डाल दी थी। मेरे साथ-साथ उन दोनों के आभारी वे
सभी सत्संग भी हैं जिन्हें वे लोग चला रहे हैं जो यहूदी समाज से नहीं
हैं। 5उनके घर में होने वाले सत्संग के सत्संगियों को भी मेरा नमस्कार।
मेरे प्रिय इपनेतस को नमस्कार। वह आसिया प्रदेश से मुक्तिदाता
येशु का पहला भक्त है। 6मरियम को भी नमस्कार। उसने तुम्हारे लाभ
के लिए बहुत मेहनत की है। 7मेरे यहूदी साथी अंदरोनिकस और बहन
जुनिया को जो मेरे साथ जेल में थे, नमस्कार। राजदूतों में उनका

बहुत आदर और सम्मान है* और मेरे से पहले वे मुक्तिदाता के भक्त
थे। [8]प्रभु येशु में मेरे प्रिय अम्पलीयातुस को नमस्कार। [9]मुक्तिदाता
की सेवा में हमारे साथ काम करने वाले उरबानुस को और मेरे प्रिय
स्ताखिस को नमस्कार।
[10]मुक्तिदाता येशु के सच्चे भक्त अपिलेस को नमस्कार और भक्त
अरिसतोबलस और उसके परिवार को भी नमस्कार। [11]यहूदी भाई
हेरोदियोन को नमस्कार। नारकिसोस के परिवार के सदस्यों को,
जो प्रभु येशु के भक्त हैं, नमस्कार। [12]प्रभु येशु की सेवा की मेहनती
कार्यकर्ता बहन त्रिफेना और त्रिफोसा को नमस्कार। प्रिय बहन
पेरसिस को, जिसने प्रभु येशु की सेवा के कामों में बहुत मेहनत की है,
नमस्कार। [13]प्रभु के चुने हुए भक्त रूफस तथा उसकी माता को, जो
मेरी भी माता समान हैं, नमस्कार।
[14]असिनक्रीतस, फिलगोन, हेरमेस, पटरोबस, हेरमास और उनके
साथ भक्त भाइयों और बहनों को नमस्कार। [15]फिलोलोगोस, यूलिया,
नेरेयस और उसकी बहन, और ओलिम्पस तथा उनके साथी सारे
पवित्र भक्तों को नमस्कार। [16]एक दूसरे को प्रेम से भरा नमस्कार करो।
सब मुक्तिदाता सत्संग के सत्संगी तुम्हें नमस्कार भेज रहे हैं।

चेतावनी

[17]भक्त भाइयो और बहनो, मेरी तुमसे विनती है कि जो तुम्हारी अच्छी
शिक्षा के रास्ते में कांटें बिछाते हैं, दूसरों की आस्था को ठेस पहुँचाते
हैं और मतभेद पैदा करते हैं, उनसे सावधान रहो और उनसे दूर रहो।
[18]क्योंकि वे हमारे मुक्तिदाता प्रभु येशु की सेवा नहीं, परंतु अपनी
इच्छाओं को पूरा करते हैं और अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों से सीधे-सादे
लोगों को भटका देते हैं। [19]पर हर कोई जानता है कि तुम कितनी अच्छी
तरह प्रभु की आज्ञा मानते हो। इससे मुझे खुशी है। मैं चाहता हूँ कि तुममें
इतना ज्ञान हो कि तुम अच्छाई का मार्ग चुनो और बुराई के मार्ग की
तरफ देखो भी नहीं। [20]शांतिदाता परमात्मा जल्दी ही शैतान को तुम्हारे
पैरों तले कुचल देंगे। हमारे प्रभु येशु की कृपा तुम्हारे साथ रहे।

*** 16:7** *राजदूतों में उनका बहुत आदर और सम्मान है* - या, “वे बहुत सम्मानित राजदूत हैं।”

[21]मेरे साथ काम करने वाले तिमोथियस और मेरे यहूदी भाई
लुकियस, यासोन और सोसिपत्रस का तुमको नमस्कार। [22]इस पत्र के
लिखने वाले प्रभु के भक्त तेरतियस का तुम्हें नमस्कार। [23-24]और पूरे
सत्संग का आदर-सत्कार करने वाले गयस भी तुम लोगों को नमस्कार
भेज रहा है। शहर-कोषाध्यक्ष इरास्तस और भाई कोरतोस का भी तुम्हें
नमस्कार।

मुक्तिदाता येशु के संदेश ने रहस्य से पर्दा उठाया

[25]परमात्मा का गुणगान हो! वह मेरे शुभ संदेश के द्वारा जो
मुक्तिदाता येशु के बारे में है तुम्हें आत्मिक रूप से मज़बूत बना सकता
है। यह शुभ संदेश उस रहस्य को खोलता है जो संसार के बनने से
पहले से छिपा हुआ था, [26]लेकिन अब रहस्य से पर्दा उठा लिया गया
है। सनातन परमात्मा ने अपने प्रवक्ताओं को शुभ संदेश के बारे में
लिखने की आज्ञा दी, कि दुनिया के हर समाज के लोग परमात्मा की
शरण में आएँ, उन पर आस्था रखें और उनकी आज्ञा का पालन करें।
[27]और अब, मुक्तिदाता येशु के कारण, हम हमेशा-हमेशा तक एकमात्र
ज्ञानी परमात्मा का गुणगान कर सकते हैं। सत्य परमात्मा की जय!